मेरी खेती

Pages:- 1- 31 | www.merikheti.com | हिंदी | सितंबर 2021

ड्रिप सिंचाई यानी टपक सिंचाई की संपूर्ण जानकारी

जानिए क्या है नए जमाने की खेती: प्रिसिजन फार्मिंग

फसलों में बीजों से होने वाले रोग व उनसे बचाव

पशुओं से होने वाले रोग

मुंहपका रोग के लक्षण और उसका बचाव

जानिए अश्वगंधा की खेती कब और कैसे करें

भूमि की तैयारी के लिए आधुनिक कृषि यन्त्र पावर हैरो

जुताई का राजा रोटावेटर

सूखे बुंदेलखंड में प्रेम सिंह ने खिलाई फुलवाड़ी

पपीते की खेती कर अंकित बने सफल किसान दूसरे कृषकों को कर रहे है प्रोत्साहित

www.merikheti.com Krishan@merikheti.com +91 766 8256 275

सलाहकार मण्डल

डॉ. एमसी शर्मा,
सेवानिवृत्त निदेशक एवं
कुलपति आईवीआरआई इज्जतनगर

प्रो. ए.पी. सिंह
पूर्व कुलपति वेटरनरी
विश्वविद्यालय मथुरा

डॉ.एस.के.गर्ग
कुलपति राजस्थान यूनिवर्सिटी ऑफ
वेटरनरी एंड एनिमल साइंस

डॉ.ओमवीर सिंह
निदेशक बीज प्रमाणीकरण
(सेवानिवृत्त) उत्तर प्रदेश

डॉ. उदय भान सिंह
डीन कृषि महाविद्यालय कुम्हेर
भरतपुर राजस्थान

श्री सुधीर अग्रवाल
(प्रगतिशील किसान)

दिलीप यादव
(विशेषज्ञ,मेरीखेती)

तेजपाल सिंह
(प्रगतिशील किसान)

श्री छेदालाल पाठक
(संरक्षक मार्गदर्शक)

कृष्ण पाठक
(विशेषज्ञ,मेरीखेती)

अन्नदाता के परिश्रम का अपमान

कहने को अन्नदाता, किसान को भगवान जैसी उपाधियां मंचों पर खूब दी जाती हैं लेकिन कृषि प्रधान देश में एमएसपी के नाम पर किसान के परिश्रम का अपमान ही नजर आता है। सोना यानी स्वर्ण किसी का पेट नहीं भर सकता। यदि उसके अस्तित्व को भी नकार दिया जाए तो प्राणिमात्र पर कोई खास दुष्प्रभाव नहीं होगा। अमीरों की शान में काम आने वाले सोने की कीमतें गुजरे दशकों में तुलनात्मक रूप से फसलों के एमएसपी से कई गुना ज्यादा बढ़ गई। 1970 से अभी तक के आंकड़ों पर नजर डालें तो कृषि जिंसों की कीमतें एमएसपी की घोषणाओं के बाद भी संतोष जनक नहीं रहीं। सरकारें भले ही एमएसपी को किसानों की किस्मत बदलने वाला बताती रहें लेकिन गेहूं पर एक साल में 70 रुपए क्विंटल की बढ़ोत्तरी उत्तर प्रदेश जैसे छोटी जोत वाले राज्यों में प्रति किसान एक हजार रुपए का लाभ भी नहीं दे पाएंगीं। यह लाभ भी तब मिलेगा जबकि हरियाणा और पंजाब जैसे राज्यों की तर्ज पर 90 फीसदी से ज्यादा किसानों का माल एमएसपी पर खरीदा जाए। यह भी तय है कि कोई भी सरकार एमएसपी पर किसानों की समूची जिंस को नहीं खरीद सकती। वह चाहे तो प्राईवेट सेक्टर को एमएसपी रेट से नीचे खरीद न करने के लिए विवश कर सकती है लेकिन उन्हें इस दिशा में काम करने में भी परेशानी उद्योग जगत से हैं। जिंस महंगी होंगी तो मजदूरों का गुजारा महंगा होगा और वह उचित वेतन की मांग करेंगे। इतना ही नहीं अपने उत्पादों की योजना वद्ध तरीके से साल में कई कई बार कीमतें बढ़ाने वाली कंपनियों का मुनाफा कम हो जाएगा।

1970 में गेहूं का खरीद मूल्य 76 रुपए प्रति क्विंटल था, जबकि 2015 में यह 1,450 रुपए प्रति क्विंटल था यानी करीब 19 फीसदी बड़ा। साल 2021 के सितंबर में यह मंडियों में 1975 के एमएसपी के सापेक्ष 1700 रुपए प्रति क्विंटल है। सेाना 70 के दशक में गेहूं से ढ़ाई गुना महंगा था जो अब 20 से 25 गुना महंगा हो गया है। 70 के दशक में एक शिक्षक का वेतन 100 से 200 रुपए के बीच था। मजदूर की मजदूरी दो रुपए थी जो अब क्रमशः 50 हजार एवं मजदूरी 400 रुपए हो गई है। यानी शिक्षक के वेतन में 250 गुना से ज्यादा एवं मजदूर की मजदूरी में 200 गुने का इजाफा हुआ है। साल 1970 में गेहूं 76 रुपए क्विंटल, धान 51 व सोना 184 रुपए प्रति 10 ग्राम था। इस क्रम में 2021 में गेहूं मंडियों में 1975 के एमएसपी के सापेक्ष 1700, धान 2500 एवं सोना 48500 रुपए प्रति 10 ग्राम है। डीजल व पेट्रोल की बात करें तो एक अप्रैल 1989 को पेट्रोल 8-50 रुपए लीटर, डीजल 3-50 रुपए लीटर, 1990 में पेट्रोल 9-84 व डीजल 4-08 रुपए प्रति लीटर था। साल 2021 में दोनों 90 रुपए प्रति लीटर के आस पास हैं।

एमएसपी यानी न्यूनतम समर्थन मूल्य की घोषणा एक सामान्य और सालाना प्रक्रिया है जो हर साल बढ़ाई जाती है लेकिन उसका महंगाई के अनुरूप न बढ़ना चिंता जनक है। किसी भी कर्मचारी का डीए सात से 9000 रुपए बढ़ाना बुरी बात नहीं लेकिन किसान को उसकी फसल का उचित मूल्य दिलाने की दिशा में ठोस प्रयास न करना गंभीर चिंता का विषय है। किसानों के बच्चे लगातार खेती से दूर होते जा रहे हैं और इसका कारण सरकारी नीतियां ही हैं। इन हालात में डेढ़ अरब की ओर बढ़ रही आबादी का पेट भरना सरकारों के लिए चुनौती बन जाएगा। हम पांच दशकों में अनेक प्रयासों के बाद भी खाद्य तेलों के मामले में आत्म निर्भर नहीं हो पाए हैं तो आम आदमी का पेट भरने वाले किसान बेरुखी का शिकार होंगे तो क्या होगा।

— दिलीप यादव
संपादक, मेरीखेती

ड्रिप सिंचाई यानी टपक सिंचाई की संपूर्ण जानकारी

किसान भाइयों आपको यह जानकर अवश्य आश्चर्य होगा कि हमारे देश में पानी का सिंचाई 85 प्रतिशत हिस्सा खेती में इस्तेमाल किया जाता है। इसके बावजूद हमारी खेती 65 प्रतिशत भग. वान भरोसे रहती है यानी बरसात पर निर्भर करती है। कहने का मतलब केवल 35 प्रतिशत खेती को सिंचाई के लिए पानी मिल पाता है। अब तेजी से बढ़ रहे औद्योगीकरण व शहरी करण से खेती के लिए पानी की किल्लत रोज-ब-रोज बढ़ने वाली है। इसलिये सरकार ने जल संरक्षण योजना चला रखी है। हमें पानी की ओर से सतर्क हो जाना चाहिये। इसके अलावा जिन किसान भाइयों को नकदी एवं व्यावसायिक फसलें लेनी होतीं हैं उन्हें पर्याप्त पानी की आवश्यकता होती है। परम्परागत सिंचाई के साधनों नहरों, नलकूपों, कुएं से सिंचाई करने से 30 से 35 प्रतिशत पानी बर्बाद हो जाता है। वैज्ञानिकों ने फल, सब्जियों व मसाला वाली उपजों की सिंचाई के लिए ड्रिप का विकल्प खोजा है, इसके अनेक लाभ हैं। आइये ड्रिप सिंचाई के बारे में विस्तार से जानते हैं।

ड्रिप सिंचाई क्या है

ड्रिप सिंचाई एक ऐसा सिस्टम है जिससे खेतों में पौधों को करीब से उनकी जड़ों तक बूंद-बूंद करके पानी पहुंचाने का काम करता है। इसकी सबसे खास बात यह है कि कम पानी में अधिक से अधिक फसल को सिंचित करना है। कुएं से पानी निकालने वाले मोटर पम्प से हेडर असेम्बली के माध्यम से मेनलाइनव सबमेन को पॉली ट्यूब से जोड़कर खेतों को आवश्यकतानुसार पानी पहुंचाया जाता है, जिसमें पौधों की दूरी के हिसाब से पानी को टपकाने के छिद्र बने होते हैं। उनसे पौधों की सिंचाई की जाती है। इसके अलावा खेत में खाद डालने के लिए भी इस सिस्टम का इस्तेमाल किया जाता है। हेडर असेम्बली में बने टैंक में पानी में खाद डाल दी जाती है। जो पाइपों के सहारे पौधों की जड़ों तक पहुंच जाती है। इससे खेती बहुत अच्छी होती है और किसान भाइयों को इससे अनेक लाभ मिलते हैं।

ड्रिप सिंचाई के सिस्टम में कौन-कौन से उपकरण होते हैं

किसान भाइयों यह ऐसा सिस्टम है कि खेत में फसल के समय पौधों के किनारे-किनारे इसके पाइपों को फैला दिया जाता है और उससे पानी दिया जाता है। फसल खत्म होने या गर्मी अधिक होने पर इस सिस्टम को समेट कर छाया में साफ सफाई करके सुरक्षित रख दिया जाता है। आइये जानते हैं कि इसमें कौन-कौन से उपकरण होते हैं।

1-हेडर असेम्बली: हेडर असेम्बली से पानी की गति को नियंत्रित किया जाता है। इसमें बाईपास, नॉन रिटर्न वाल्व, एयर रिलीज शामिल होते हैं।

2-फिल्टर्स: जल्दी पकने वाली किस्मों में बुआई से पहले प्रति एकड़ 24 किलो नाइट्रोजन, 24 किलो फास्फोरसऔर 24 किलो पोटाश को डालना चाहिये। रोपाई के बाद जब कल्ले निकलते दिखें उस समय किसान भाइयों को 24 किलो नाइट्रोजन को डालना चाहिये। इससे अच्छी पैदावार हो सकती है।

3- खाद व रसायन देने के उपकरण:

ड्रिप सिंचाई द्वारा उर्वरकों व खादों को इस सिस्टम में लगे वेंचूरी और फर्टिलाइजर टैंक से पौधों तक पहुंचाया जाता है। वेंचूरी दाब के अंतर पर चलने वाला उपकरण है। खाद व रसायन इसके द्वारा उचित ढंग से दिये जा सकते हैं। इस सिस्टम से खाद व रसायन को घोल कर पानी में इसकी स्पीड के अनुसार डाले जाते हैं। इस सिस्टम से एक घंटे में 60 से 70 लीटर की गति से खाद व रसायन दिये जा सकते हैं। फर्टिलाइजर टैंक में घुली हुई खाद को भर कर प्रेशर कंट्रोल करके सिस्टम में डाल दी जाती है, जो पाइपों के माध्यम से पौधों तक पहुंचती है।

4 - मेन लाइन: मेन लाइन पम्प से सबमेन यानी खेत में लगे पाइपों तक पानी पहुंचाने का काम करती है।

5 - सब मेन: सबमेन ही पौधों तक पहुंचाने का एक उपकरण है। मेनलाइन से पानी लेकर सबमेन लिटरल या पॉलीटयूब तक पानी पहुंचाती है। ये पीवीसी या एचडीपीपीई पाइप की होती है। सबमेन को जमीन के अंदर कम से कम डेढ़ से दो फीट की गहराई पर रखते हैं।

सबमेन ही पौधों तक पहुंचाने का एक उपकरण है। मेनलाइन से पानी लेकर इसमें पानी की स्पीड और प्रेशर कंट्रोल करने के लिए शुरू में वॉल्व और आखिरी में फ्लश वॉल्व लगाया जाता है।

6 - वाल्व: पानी की स्पीड यानी गति और प्रेशर यानी दबाव को कंट्रोल करने के लिए सबमेन के आगे वॉल्व लगाये जाते हैं। सबमेन के शुरू में एयर रिलीज और वैक्यूम रिलीज लगाये जाने जरूरी होते हैं। इनके न लगाने से पम्प बंद करने के बाद हवा से मिट्टी धूल आदि अंदर भर जाने से ड्रिपर्स के छिद्र बंद हो सकते हैं।

7 - सबमेन का पानी पॉलीट्यूब

सबमेन का पानी पॉलीट्यूब द्वारा पूरे खेत में पहुंचाया जाता है। प्रत्येक पौधे के पास आवश्यकतानुसार पॉलीट्यूब के ऊपर ड्रिपर लगाया जाता है। लेटरल्स एलएलडीपीई से बनाये जाते हैं।

8 - एमीटर्स या ड्रिपर:

ड्रिप सिंचाई सिस्टम का यह प्रमुख उपकरण है। ड्रिपर्स का ऑनलाइन या इनलाइन की प्रति घंटे की स्पीड और संख्या की अधिकतम जरूरत के अनुसार निश्चित किया जाता है। ऊबड़-खाबड़ वाली जमीन पर कॉम्पनसेटिंग ड्रिपर्स लगाये जाते हैं। मिनी स्प्रिंकलर या जेट्स ऐसा उपकरण है जिसे एक्सटेंशन ट्यूब की सहायता से पॉलीट्यूब पर लगाया जा सकता है।

ड्रिप सिंचाई से मिलने वाले लाभ:

1. पहला लाभ यह होता है कि इस सिंचाई से बंजर, ऊसर, ऊबड़-खाबड़ वाली जमीन, क्षारयुक्त, शुष्क खेती वाली, पानी के कम रिसाव वाली और अल्प वर्षा की खारी एवं समुद्र तटीय जमीन पर भी फसल उगाई जा सकती है।
2. ड्रिप सिंचाई से पेड़-पौधों को रोजाना पर्याप्त पानी मिलता है। फसलों की बढ़ोत्तरी और पैदावार दोनों में काफी बढ़ोत्तरी होती है।
3. ड्रिप सिंचाई से फल, सब्जी और अन्य फसलों की पैदावार में 20 से 50 प्रतिशत तक की वृद्धि हो सकती है।
4. इस तरह की सिंचाई में एक भी बूंद बरबाद न होने से 30 से 60 प्रतिशत तक पानी की बचत होती है। इससे किसान भाइयों का पैसा बचता है और भूजल संरक्षण को बढ़ावा मिलता है।
5. फर्टिगेशन में ड्रिप सिंचाई अत्यधिक कारगर है। इस सिंचाई से उर्वरकों व रासायनिकों के पोषक तत्व सीधे पौधों के पास तक पहुंचते हैं। इससे खाद व रासायनिक की 40 से 50 प्रतिशत तक बचत होती है। महंगी खादों में यह बचत किसान भाइयों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।
6. खरपतवार नियंत्रण में भी यह सिंचाई प्रणाली फायदेमंद रहती है। पौधों की जड़ों में सीधे पानी पहुंचने के कारण आसपास की जमीन सूखी रहती है जिससे खरपतवार के उगने की संभावना नही रहती है।
7. टपक सिंचाई प्रणाली से सिंचाई किये जाने से पौधे काफी मजबूत होते है। इनमें कीट व रोग आसानी से नहीं लगते हैं। इससे किसान भाइयों को कीटनाशक का खर्चा कम हो जाता है।

किस तरह की खेती में अधिक लाभकारी है ड्रिप सिंचाई

रोपाई से लगभग ड्रिप सिंचाई सब्जियों व फल तथा मसाले की खेती के लिए अधिक लाभकारी होती है। इस तरह की सिंचाई उन फसलों में की जाती है जो पौधे दूर-दूर लाइन में लगाये जाते हैं। गेहूं की फसल में यह सिंचाई कारगर नहीं है

कैसे किया जाता है ड्रिप सिंचाई सिस्टम का मेंटेनेंस

ड्रिप सिंचाई सिस्टम का रखरखाव यानी मेंटेनेंस बहुत आवश्यक है। इससे यह सिस्टम 10 साल तक चलाया जा सकता है।

1.रोजाना पम्प को चालू करने के बाद प्रेशर के ठीक होने के पर सैंड फिल्टर, हायड्रोसाइक्लोन को चेक करते रहना चाहिये। समय-समय पर इन फिल्टर्स की साफ सफाई करते रहना चाहिये।

2.खेतों में पाइप लाइन की जांच पड़ताल करनी चाहिये। मुड़े पाइपों को सीधा करें। टूटे-फूटे पाइपों की मरम्मत करें या बदलें।

3.पाइपों में जाने वाले पानी का प्रेशर देखें, उसे नियंत्रित करें ताकि पूरे खेत में पानी पहुंच सके। ड्रिपर्स से गिरने वाले पानी को देखें कि पानी आ रहा है या नहीं।

4.लेटरल यानी इनलाइन के अंतिम छोर पर लगे फ्लश वॉल्व को खोलकर थोड़ी देर तक पानी को गिरायें।

5.खेत में पानी की सिंचाई हो जाने के बाद लेटरल या पॉली ट्यूब को समेट कर छाया में रख दें।

6.समय-समय पर हेडर असेम्बली की चेकिंग करके छोटी-मोटी कमियों को दूर करते रहना चाहिये। इससे सिस्टम की मरम्मत में बहुत कम खर्चा आयेगा।

सब्सिडी मिलती है

ड्रिप सिंचाई सिस्टम थोड़ा महंगा है। छोटे किसानों की क्षमता से बाहर की बात है। देश में आज भी 75 प्रतिशत छोटे किसान हैं।

ड्रिप सिंचाई सिस्टम की लागत

अनुभवी किसानों या खरीदने वाले किसानों से मिली जानकारी के अनुसार यह सिस्टम प्रति हेक्टेयर के हिसाब से 1.25 से लेकर 1.50 लाख रुपये तक में आता है। इसमें पाइप की आईएसआई मार्का व क्वालिटी के कारण अंतर आता है। इसमें 50 प्रतिशत तक अनुदान मिल सकता है।

जानिए क्या है नए जमाने की खेती: प्रिसिजन फार्मिंग

नमस्कार किसान भाइयो, आज हम मेरीखेती.कॉम में आपसे कुछ नई तकनीकी पर आधारित खेती की बात करेंगें. भाइयों अपने देश में जिस तरह से खेती होती है उससे आप सभी परचित हो. यहाँ आपको ज्ञान बांटने की जरूरत नहीं है. आज हम चतमबपेपवद तिउपदह के बारे में बात करेंगें. क्या है प्रिसिजन फार्मिंग और कितने किसान भाई इस तकनीक के बारे में जानते हैं? में समझता हूँ की हम में से ज्यादातर किसान भाई इसके बारे में नहीं जानते होंगें.

जैसा की आप जानते हैं दिन प्रतिदिन हमारी खेती की जमीन कम होती जा रही है. खेती की जमीन पर अब कंक्रीट के जंगल बनते जा रहे हैं. खेती की जमीन कोई रबर तो है नहीं की उसको खींचा जा सके? अब इसमें सरकार और किसान दोनों को ही टेक्नोलॉजी का प्रयोग करना पड़ेगा तभी जाकर हम अपने देश के लिए पर्याप्त भोजन की व्यवस्था कर सकते हैं. खेती में टेक्नोलॉजी के प्रयोग को हम प्रिसिजन फार्मिंग कहते हैं.

हमारे देश में एक बड़ी सोच यह है की हम अपने पडोसी को देख कर काम करते हैं. वो कहते हैं ना जब किसी की बिज. ली चली जाये तो वो बस पडोसी की बिजली आ रही है या नहीं ये देखेगा और बस कुछ नहीं. अगर उसकी नहीं आ रही है तो कोई बात नहीं है, अगर उसकी आ रही है तो मेरी क्यों नहीं. यही बात हम अपने खेतों में लागू करते हैं. अगर पडोसी ने गेहूं करे हैं तो में भी गेंहूं ही करूँगा आलू या सरसों, सब्जी की फसल नहीं. जो नुकसान फायदा इसका होगा वही मेरा होगा.

हमें इस सोच से निकल कर आगे जाना होगा और नई टेक्नोलॉजी को भी अपनी खेती में लाना होगा. इसी को प्रिसिजन फार्मिंग कहते हैं.

क्या है नए जमाने की खेती प्रिसिजन फार्मिंग?

प्रिसिजन फार्मिंग:

प्रिसिजन फार्मिंग मतलब खेती में शुरुआत से लेकर अंत तक टेक्नोलॉजी का प्रयोग करना ही प्रिसिजन फार्मिंग होता है. इसमें ना तो ज्यादा खाद चाहिए होता है और ना ही ज्यादा पानी. इसमें सेंसर की मदद से हमारी फसलों की जरूरत पता की जाती है उसके बाद उसी चीज को पौधे या फसल को लगाया जाता है.

इसको शुरू करने से पहले मिटटी की जाँच कराइ जाती है उसके आधार पर उसमें क्या फसल बोई जाएगी ये तय किया जाता है. फिर मौसम, पानी, बैक्टीरिया आदि सभी बातों को ध्यान में रख के किसान अपनी फसल तय करता है. इससे किसान की लगत भी काम होती है तथा पर्यावरण को भी नुकसान नहीं होता है.

इसमें किसान भेड़चाल में आकर अपना पैसा बर्बाद होने से बचाता है. जैसे की अगर पड़ोसी ने 10 किलो बीघा का यूरिआ लगाया है तो वो भी इतना ही खाद अपने खेत में डालेगा. जो की अक्सर किसान भाई करते है. इस तकनीक से पौधे को जब पानी की आवश्यकता होती है तो पानी दिया जाता है, जब खाद की जरूरत होती है तो खाद दिया जाता है और वो भी पौधे की जड़ में पाइप की मदद से. तो इससे किसान की लागत कम आती है और उसका मुनाफा कई गुना बढ़ जाता है.

कब शुरू हुआ प्रिसिजन फार्मिंग?

इस तरह की खेती अमेरिका में सन 1980 के दशक में हुई थी.धीरे धीरे अन्य देशों ने भी इसे करना शुरू किया. आज नीदरलैंड में आलू की खेती इसी विधि से की जा रही है. और वो आलू में अच्छा उत्पादन भी ले रहे हैं. हम भी इस तकनिकी का प्रयोग करके कम लागत में ज्यादा उत्पादन ले सकते हैं.

प्रिसिजन फार्मिंग के फायदे:

1.प्रिसिजन फार्मिंग के बहुत सारे फायदे हैं. इसकी सहायता से हम फसल में रोग आने पर उसकी रोकथाम के लिए सेंसर की सहायता से समय से उपचार कर सकते हैं.

2.इसकी सहायता से सीधे पौधों के जड़ों में पानी और कीटनाशक दे सकते हैं.

3.इसकी सहायता से हम अपनी लागत कम कर सकते हैं तथा उत्पादन को बढ़ा सकते हैं. इससे किसान की आमदनी बढाती है तथा उसके जीवन स्तर में सुधार आता है.

4.पानी का प्रयोग जरूरत के हिसाब से कर सकते हैं. पूरे खेत में पानी देने की आवश्यकता नहीं होती सीधे पेड़ों की जड़ों में पानी दे सकते हैं.

5.फसल का उत्पादन अच्छी गुणवत्ता वाला होता है. इसके द्वारा उत्पादन की गई फसल के दाने सामान्य तरीके से उगाई गई फसल से ज्यादा चमकदार और अच्छे होते हैं.

6.मिटटी की गुणवत्ता भी खराब नहीं होती है.

भारत में इसके प्रयोग को लेकर चुनौतियां:

प्रिसिजन फार्मिंग पर किए गए कई रिसर्च से पता चलता है कि इसके लिए सबसे बड़ी चुनौती उचित शिक्षा और आर्थिक स्थिति है. भारत में 80 : छोटे किसान हैं जिनकी जोत आकार बहुत छोटा है. उनकी आर्थिक हैसियत भी उतनी अच्छी नहीं है जिससे की वो किसी भी टेक्नोलॉजी को बिना सरकार की सहायता से अपने खेत में इस्तेमाल कर सकें. एक अनुमान में कहा गया है कि 2050 तक दुनिया की आबादी करीब 10 अरब के पार पहुंच जाएगी. ऐसे में भारत के पास भी मौका है कि कृषि उत्पादन के मामले में अपनी पकड़ और भी मौजूद कर लें. इसके लिए सरकार को अपनी तरफ से किसानों को प्रशिक्षण देना होगा जिससे की आने वाली समस्या की तैयारी अभी से की जा सके.

फसलों में बीजों से होने वाले रोग व उनसे बचाव

कई रोग बीज जनित होते हैं। यानी कि बीज के साथ ही किसी रोग संक्रमण के कारक मौजूद होते हैं। जैसे ही उन्हें विकास करने के लिए अनुकूल पर्यावरणीय परिस्थिति मिलती है रोग का प्रसार तेज हो जाता है। इन रोगों की जानकारी होना किसानों के लिए बेहद जरूरी है। यदि वह इन रोगों के बारे में जान लेंगे तो फसलों में होने वाले व्यापक नुकसान से बचा जा सकता है।

धान की फसल: धान की फसल में 1121 एवं 1509 किस्म के धान में आने वाला बकानी रोग इसका जीता जागता उदाहरण है। धान में बकानी एवं पदगलन रोग भी बीज जनित होता है। बकानी रोग में चंद पौधे सामान्य से ज्यादा लम्बे हो जाते हैं और धीरे करके जल जाते हैं। यह रोग फसल में बहुत तेजी से फैलता है। इस रोग से बचाव के लिए प्रारंभ में ही संक्रमित पौधों को उखाड देना चाहिए। उखाड़ते समय इस बात का भी ध्यान रखें कि गीली मिट्टी खेत में ज्यादा न फैले अन्यथा मिट्टी के साथ छिटक कर रोगाणु ज्यादा जगह को प्रभावित कर सकते हैं।

उपचार: रोग रहित बीज का प्रयोग करें। दो प्रतिशत नमक का घोल बनाकर उनमें बीज को भिगोएं। थोथे बीज को फैंक दें। बाकी बचे बीज को कई बार साफ पानी से साफ करें ताकि उसमें नमक का अंश न रहे। बृद्धि कारक नाइट्रोजन आदि उर्वरकों का रोग संक्रमण के दौरान बिल्कुल भी प्रयोग न करें बीज को उपचारित करके ही बोएं। रोग संक्रमण के लक्षण प्रदर्शित होने पर प्रभावी फफूंदनाशी का छिड़काव भी करें साथ ही बालू में मिलाकर खेत में बुरकाव भी करें।

गेहूं की फसल: गेहूं की फसल में लगने वाला कंडुआ रोग बीज जनित ही होता है। ज्यादातर किसान बीज को उपचारित करके नहीं बेचते। बीज विक्रेता कई राज्यों में बीज में दवा नहीं मिलाते। यह काम वह दुकानदारों को दोहरी परेशानियों से बचाने के लिए करते हैं। पहला दवा मिश्रित बीज से दुकान में बैठने के दौरान दिक्कत होती है।

दूसरा बीज बचने पर उसे मण्डी आदि में बेच कर नुकसान की भरपाई नहीं हो पाती। गेहूं का कंडुआ रोग बीज के भ्रूण में होता है। वह पौधे के विकास के साथ ही बढ़ता रहता है। जब फसल में बाली आने वाली होती है तब वह अपना प्रभाव दिखाता है। किसी भी संक्रमित बाली में लाखों रोगाणु होते हैं। जब हवा चलती है तो यह रोगाणु एक बाली से उडकर दूसरी बाली में जाते हैं। इससे अधिकांश फसल प्रभावित हो जाती है।

बचाव-

फसल को इस रोग से बचाने के लिए बीज को उपचारित करके बोना चाहिए। इसके लिए 2.5 ग्राम थायरम या बाबस्टीन आदि किसी भी गैर प्रतिबंधित फफूंदनाशक दवा से प्रति किलोग्राम बीज में मिलाकर उपचार करना चाहिए। इसके बाद ही बीज को खेत में बोना चाहिए।

सरसों कुल की फसलों के रोग-

बंद गोभी, फूलगोभी, ब्रोकली, सरसों एवं मूली फसल में कृष्ण गलन रोग काफी नुकसान पहुंचाता है। यह रोग जीवाणु जनित होता है। रोग का प्रसार पत्तियों के किनारों पर हरिमाहीन धब्बों के बनने की प्रक्रिया से शुरू होता है। पत्तियों की शिराएं भूरी हो. कर बाद में काली पड़ जाती हैं। धीरे धीरे पत्तियां पीली पड़कर झड़ने लगती हैं।

बचाव- रोग रहित बीज का प्रयोग करें। बीज को 50 डिग्री सेल्सियस गर्म पानी में आधा घण्टे तक रखें। संक्रमित पौधों को उखाड़ दें। रोग से छुटकारा पाने के लिए बीज का रासायनिक उपचार करें। इसके लिए एग्रीमाइसिन 100 की एक प्रतिशत अथवा स्टेप्टोसाइक्लिन एक प्रतिशत का उपयोग करें। खडी फसल पर स्टेप्टोसाइक्लिन 18 ग्राम प्रति एकड़ 200 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करना चाहिए।

इसके अलावा कॉपरआक्सीक्लोराइड का तीन प्रतिशत की दर से छिड़काव करना चाहिए।

प्याज का बैंगनी धब्बा रोग-

यह रोग समूचे प्याज लहसुन की खेती वाले इलाकों में होता है। यह रोग पहले सफेद धंसे विक्षतों के रूप में दिखाई देता है। धीरे धीरे इनका आकार बढ़ता है और बाद में यह
धारी का आकार ले लेते हैं। धीरे धीरे इनका रंग भूरा होता है और पौधा इसी स्थान से गलना आरंभ हो जाता है। इसके बाद सूखने लगता है।

बचाव- बचाव के लिए बीज का थीरम से 2.5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करने के बाद बोना चाहिए। फसल पर कार्बेन्डाजिम एवं मेन्कोजेब के मिश्रण का छिड़काब करना चाहिए। रोग का लक्षण दिखाई देने पर टेबुकोनाजोल 50 प्रतिशत एवं ट्राइफ्लोक्सीस्ट्राबिन 25 प्रतिशत का 80 से 100 ग्राम मात्रा में 200 लीटर पानी के साथ प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करना चाहिए।

बाजरा की फसल-

बाजरा की फसल में भी अर्गट रोग लगता है। इसके अलावा हरी बाली रोग भी लगता है। इस तरह के रोगों का पता आरंभिक अवस्था में नहीं चलता। बाद में बाली बनने की अवस्था पर पता चलने पर शुरुआत में ही यदि उपचार किए जाए तो ठीक अन्यथा बालियों में दाने ही नहीं बनते और किसानों को केवल चारे से ही संतुष्ट होना पड़ता है। इससे बचाव के लिए प्रतिरोधी किस्मों की बिजाई करें। बीज को प्रभावी दवाओं से उपचारित करके बोएं।

दूध के साथ मिल रहीं बीमारी से बचें किसान

कई रोग ऐसे हैं जो पशुओं से मनुष्यों में फैलते हैं। इनमें से कई तो इतने घातक हैं कि जिनका निदान भी संभव नहीं है। पशुपालन करने वाले सीधे साधे किसान और विशेषकर महिला किसान इनके विषय में नहीं जानते। इन रोगों से खुद को बचाने के लिए किसानों को इनके लक्षण पता होने चाहिए और संक्रमण से बचने के लिए जरूरी सावधानी बरतनी चाहिए।

मनुष्यों में ये रोग एक गम्भीर समस्या हैं। हमारे देश में जहाँ 72 प्रतिशत से भी अधिक जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है तथा पशु-पक्षियों की
देखभाल करते समय किसान व पशुपालक भाई बहनें तथा उनके बच्चे स्वयं भी जाने अनजाने में इन रोगों से ग्रसित हो जाते हैं वहां इन रोगों का महत्व अत्यधिक बढ़ जाता है।

अभी तक लगभग 300 से अधिक इस श्रेणी के रोग पहचाने जा चुके हैं। विशेषतः उनके चारे-पानी व दाने की व्यवस्था करते समय, पशुओं को नहलाने तथा बाड़े की साफ-सफई करते समय गर्भावस्था में मादा पशुओं व जन्म के समय, नवजात पशुओं की देखभाल करते समय, कृषि व पशुपालन से संबंधित कार्यों में उनका उपयोग करते समय तथा उनके साथ एक ही छत के नीचे रहने व सोते समय।

1. रेबीज या अर्लक रोग (पागल कुत्ते (मुख्यतः बिल्ली, बन्दर, नेवला, सियार व लोमडी की लार में पाया जाने वाला विषाणु है।
2. बर्ड फ्लू (ऐवियन इनफ्लूएंजा एच 5 एन 1 नामक विषाणु से होने वाले मुर्गियों की अत्यन्त संक्रामक महामारी है।
3. जेपेनीज बी मस्तिष्क शोथ या जापानी मस्तिष्क ज्वर (संक्रमित मच्छर के काटने से फैलने वाला रोग है।
4. एन्थ्रेक्स या गिल्टी रोग (रोगी पशु के स्रावों द्वारा दूषित चारे व पानी द्वारा होने वाला घातक संक्रामक रोग है। ब्रूसेल्ला संक्रमण द्वारा पशुओं में गर्भपात व अन्य प्रजनन रोग होते हैं।

5.टीबी तपेदिक या यक्ष्मा रोग (रोगी पशु की सांस से संक्रमित वायु द्वारा पशुओं के फेफड़ों व अन्य अंगों का घातक संक्रमण।

6.प्लेग (चूहों के पिस्सुओं द्वारा काटने से होने वाला अत्यन्त घातक गिल्टी या फेफड़ों का रोग

7.लेप्टोस्पाइरोसिस (रोगी पशुओं व चूहों के मूत्र द्वारा अथवा बरसात या सीवर लाइनों के गंदे पानी द्वारा दूषित जल को पीने अथवा इस जल में रहकर खेतों में देर तक नंगे पैर कृषि कार्य करने से त्वचा द्वारा फैलने वाला आंतों, यकृत तथा वृक्कों (गुर्दो का घातक संक्रमण टाक्सोप्लाज्मोसिस या टाक्सोप्लाज्मा संक्रमण (पालतू बिल्लियों के मल से दूषित भोज्य पदार्थो व जल द्वारा होने वाला गर्भपात व अन्य रोग)

8.दाद या रिंगवर्म संक्रमण (पशुओं व मनुष्यों की त्वचा, बालों या नाखूनों को प्रभावित करने वाली गोल सिक्के के रूप में फैलने वाली खुजली।

रोकथाम के कुछ सामान्य उपाय- बचाव उपचार की अपेक्षा अच्छा है दृ ये छूत के रोग संक्रामक एवं बहुत भयानक होते हैं। जिसमें करोड़ों की संख्या में पशु प्रतिवर्ष मृत्यु के घाट उतरते हैं।

आर्दश प्रबन्धन- पशु स्वस्थ रखे जाएं। उनके आहार, प्रजनन व रोग परीक्षण, निदान तथा उपचार का समुचित प्रबन्ध किया जाए। समय-समय पर रोगों के टीके लगाये जाएं।

बीमार पशुओं को स्वस्थ पशुओं से अलग कर देना चाहिए। मेले अथवा हाट से नये खरीदे गये पशुओं को स्वस्थ पशुओं से एक माह के अन्तराल तक अलग रखने के पश्चात ही पशुबाडे के अन्य स्वस्थ पशुओं से मिलाना चाहिये। रोगी पशुओं के दूध या मांस का उपयोग बिल्कुल न किया जाए। दूध, मांस, अण्डे व इनके अन्य उत्पादों को यदि मनुष्यों के उपयोग में लाया भी जाये तो यह अति आवश्यक है कि इन पदार्थो को उबालकर, पास्चुरीकरण द्वारा अथवा डिब्बाबंद करने की विधि (केनिंग, द्वारा विसंक्रमित किया जाये। थनैला से ग्रस्त रोगी पशुओं के दूध का सेवन रोग काल में तथा थनों में दवा चढाने के 72 घंटों बाद तक कदापि नहीं करना चाहिये।

रोगी पशुओं अथवा उनके अन्य उत्पादों (दुग्ध मांस) अण्डे के सम्पर्क में आये बर्तनों व हाथों को कार्बोलिक साबुन या क्लोरीन स्रोत जैसे डौमेक्स या ब्लीचिंग पाउडर के घोल से धोकर अवश्य विसंक्रमित किया जाना चाहिये। दूषित चरागाह पर चूना छिड़काव कर अथवा हल चलवा कर उसे 5- 6 माह की अवधि के लिये खाली छोड देना चाहिए। उक्त रोगों से ग्रस्त होकर मरे पशु के शव और बिछावन आदि का उचित प्रबन्ध दृ रोगी पशुओं के पालन क्षेत्रों तथा मृत्यु स्थल को फार्मलीन, कार्बोलिक अम्ल, फिनायल, लाइसौल अथवा डिटौल आदि के घोल से विसंक्रमित किया जाना चाहिये।

जानिए खुरपका-मुंहपका रोग के लक्षण और उसका बचाव

बरसात का सीजन आते ही पशुओं में खुरपका मुंहपका रोग का संक्रमण तेज हो जाता है। इस रोग के निदान के लिए राज्य सरकार निःशुल्क वैक्सीनेशन अभियान चलाती हैं लेकिन गाभिन पशुओं को वैक्सीन न लगाने की पृवृत्ति के चलते रोग संक्रमण एक पशु से दूसरे पशुओं में फैलता है। कई राज्यों में इस रोग का संक्रमण दिखने लगा है। दिल्ली के नजदीकी इलाकों में रोग संक्रमण की खबरें आने लगी हैं। उत्तर प्रदेश में वैक्सीनेशन अभियान चल रहा है।

उत्पादन-रोग का प्रभाव नाम के अनुरूप होता है। इस रोग के संक्रमण के साथ ही पशु के खुरों व मुंह में घाव व छाले हो जाते हैं। इसके कारण पशु को एक दो दिन तेज बुखार भी आ सकता है। छाले होने के कारण पशु चारा भी खाना बंद कर देता है। यदि दुधारू पशु है तो उसका दुग्ध उत्पादन भी प्रभावित होने लगता है। पशु लंगड़ाकर चलने लगता है। यदि देखभाल व उपचार समय पर न मिले तो खुरों के मध्य में कीड़े तक पड़ जाते हैं। पशु मुंह में छालों के कारण लगातार लार गिराने लगता है। इस रोग में सामान्यतः पशु मरता तो नहीं लेकिन स्थिति बेहद खराब हो जाती है। रोग प्रभाव में आने वाला दुधारू पशु ठीक होने के बाद भी आसानी से पूरे दूध पर नहीं आता। पशु की प्रजनन क्षमता प्रभावित होने के कारण वह समय से गर्मी में नहीं आता। कुल मिलाकर कीमती पशु आधी कीमत का भी नहीं रहता।

बचाव-रोग के संक्रमण से बचाने के लिए हर हाल में समय से टीकाकरण कराना चाहिए। प्रभावित पशु को अन्य पशुओं एवं पशु बाडे से अलग कर देना चाहिए ताकि अन्य पशुओं को रोग संक्रमण न हो। पोटेशियम परमैंगनेट के घोल से पैरों व पशु को बांधने वाले स्थान की दिन में कमसे कम दो बार सफाई करें। नीम के पत्तों को पीसकर खुरों में लगा सकते हैं। पशु को खाने के लिए भूसे की बजाय मुलायम हरा चारा दें ताकि वह घावों में चुभे नहीं और पशु थोड़ा बहुत ही सही हरा चारा खाता रहे। चिकित्सक से परामर्श कर उचित उपचार कराएं। मुंह के छालों को एक प्रतिशत फिटकरी को पानी में घोलकर या लाल दवा के घोल से धुलते रहना चाहिए।

भूमि की तैयारी के लिए आधुनिक कृषि यन्त्र पावर हैरो:-

किसान भाइयों को एक फसल पकने के बाद दूसरी फसल के लिए खेत को तैयार करना होता है। उस समय खेत की मिट्टी सख्त हो जाती है और पूर्व फसल के अंश रह जाते हैं और खरपतवार भी होता है। इन सबको कम्पोस्ट खाद बनाने और मिट्टी पलटने के लिए कृषि यंत्र हैरो का इस्तेमाल किया जाता है। ट्रैक्टर चालित यंत्र हैरो खेत की मिट्टी को इस तरह से पलटता है कि खेत में मौजूद कूड़ा-कचड़ा व हरियाली जमीन में दब जाती है। जो जैविक खाद में परिवर्तित हो जाती हैं। इससे खेत को उपजाऊ बनाने में मदद मिलती है। आइये जानते हैं कि हैरो किस तरह से खेत को तैयार करने का काम करना है और खेती के लिए कितना उपयोगी है।

खेत की तैयारी हुई आसान- नई फसल के लिए खेत को तैयार करने के लिए पहले बैलों के बीचे गहरी जुताई करने वाले हल का प्रयोग किया जाता था। इससे खेत की कई बार जुताई करनी होती थी। उसकी खरपतवार हटाने के लिए मजदूरों को लगाना होता था और उसके बाद खेत की मिट्टी को महीन करने के लिए यानी ढेले फोड़ने के लिए पाटा चलाना पड़ता था। इसमे किसान भाइयों का समय अधिक लगता था और मेहनत भी अधिक करनी होती थी। खास बात यह है कि फसल कटाई के बाद अप्रैल,मई व जून की भीषण गर्मी की प्रचण्ड धूप में किसान भाइयों को पसीना बहाना पड़ता था। लेकिन अब हैरो नामक कृषि यंत्र ने किसानों की इन सारी समस्याओं का हल निकाल लिया है।

कहां-कहां काम कर सकता है हैरो- जुताई के अन्य यंत्र जहां सामान्य एवं मुलायम मिट्टी वाले खेतों को तैयार करने के काम में आते हैं, वहीं हैरो सख्त जमीन व पथरीली जमीन, अधिक खरपतवार वाली जमीन में आसानी से काम करता है। इसकी डिस्क यानी वर्टिकल टाइन आसानी से सख्त से सख्त मिट्टी को काट कर पलट देती है। साथ ही जमीन में चाहे ही कितनी भी अधिक खरपतवार हो उसे जमीन में दबा देती है। किसान भाइयों मिट्टी पलटने से जहां जैविक खाद का लाभ मिलता है वहीं इसको खुला छोड़ने से जमीन लगने वाली व्याधियां व कीट भी नष्ट हो जाते हैं। इससे अगली फसल में अच्छा उत्पादन भी मिलता है।

क्यारियां व बाग-बगीचा बनाने के काम आता है हैरो:-

खेत की जुताई के साथ नर्सरी के लिए क्यारियों या बैड बनाने के काम में हैरो का इस्तेमाल किया जा सकता है। इसके अलावा सख्त जमीन की जुताई में सक्षम होने के कारण हैरो का इस्तेमाल बाग-बगीचा लगाने के लिए भी जमीन को तैयार करने में किया जाता है।

हैरों के खेती से जुडे मुख्य काम:-

हैरो विभिन्न धारदार कटिंग पहियों, डिस्क या टाइन के सेट को कहा जाता है। अब पहियों व कांटे जैसे स्पाइक वाले हैरो भी आ गये हैं। इस हैरों से खेत में क्या-क्या काम होते हैं, जानिये

1.हैरो मिट्टी को पलटने का काम सबसे पहले करता है।

2.हैरो खेत की पूर्व फसल के अवशेष व खरपतवार को जमीन में दबा देता है, जो खाद बन जाती है

3.यदि नई फसल को नुकसान देने वाली सामग्री खेत में होती है उसको खेत से बाहर निकालने का भी काम हैरो करता है

4.हैरो मिट्टी की गहरी जुताई करने के साथ उसके ढेलों को फोड़ने का भी काम करता है।

5.हैरो जमीन की ऊपरी सतह को चिकनी व उपजाऊ बनाने का काम करता है

चार प्रकार के हैरो होते हैं:- खेती को कई बार जुताई करने, पाटा चलाने, खरपतवार नियंत्रण करने के अलग-अलग कामों के लिए अलग. -अलग प्रकार के हैरों का इस्तेमाल किया जाता है। खेती की आवश्यकता को देखते हुए परम्परागत कार्यो के लिए हैरो को चार भागों में विभाजित किया गया है, जो इस प्रकार हैं:-

१.डिस्क हैरो: हल्की जुताई, मिट्टी के ढेलों को तोड़ने तथा खेत की मिट्टी को भुरभुरी बनाने के लिए सबसे अच्छा माना जाता है।

२.स्प्रिंग टूथ हैरो: यह हैरो जुताई के बाद ढेले तोड़ने तथा उनको ऊपर लाने ताकि पाटा से आसानी से टूट सकें जैसे काम के लिए उपयोगी होता है।

३.चेन डिस्क हैरो: यह हैरो खेतों में खाद फैलाने और खरपतवार को एकत्रित करने के लिए सबसे अच्छा माना जाता है।

४.लीवर हैरो या स्पाइक टूथ हैरो: बोये हुए खेत में उचित जमाव या हल्की वर्षा पड़ी हुई पपड़ी को तोड़ने के काम में आता है। इसका प्रयोग लाइन में या छिड़काव कर बोई फसल के छह-सात इंच तक बढ़ने के समय आसानी से किया जा सकता है।

पहले ये हैरो बैलों से खिंचवा कर खेतों की तैयारी का काम कराया जाता था लेकिन अब ट्रैक्टर के पीछे हैरो को लगाकर काम किया जाता है। जो कम समय में अच्छा खेत तैयार करता है।

रोटरी पॉवर हैरो है सबसे अधिक लोकप्रिय :- वर्तमान समय में हैरों के काफी संशोधन किये गये हैं और पारम्परिक हैरो की जगह पर रोटरी पॉवर हैरो यानी पॉवर हैरो आ गया है। यह पॉवर हैरो कम समय में बहुत अच्छा काम करता है।

50 हॉर्स पॉवर के ट्रैक्टर से चलने वाले इस हैरो से जहां मिट्टी पलटाने से लेकर खेत को बुवाई के लिए बहुत जल्दी तैयार करने में मदद मिलती है।

हैरों की कुछ खास जानकारियां :-

1.हैरो की अनेक किस्में होतीं हैं। इन किस्मों में सिंगल टाइन सेट, डबल टाइन सेट या मल्टी टाइन सेट वाले हैरो शामिल हैं। इनके प्रयोग को देखते हुए इनकी टाइन में कटिंग वाले टाइन, सेमी कटिंग वाले टाइन, स्पाइक आदि को लगाया जाता है।

2.हैरो का वजन 400 किलो से लेकर 2000 किलो तक होता है। ये छह ब्लेड से लेकर 28 ब्लेड वाले होते हैं। इनकी चौड़ाई एक मीटर से लेकर पांच मीटर तक की होती है। इसके अलावा ये 35 हॉर्स पावर से लेकर 100 हार्स पॉवर तक के होते हैं।

हैरो की कीमत:- हैरो की कीमत उनकी लम्बाई, चौड़ाई व वजन, ब्लेडों की संख्या, व हॉर्स पॉवर आदि पर निर्भर करती है। वैसे यह अनुमान लगाया जाता है कि हैरो की कीमत उनके काम करने की क्षमता उपयोगिता के अनुसार 50,000 से लेकर 1.5 लाख रुपये तक होती है।

हैरों की विशेषताएं:- जो किसान भाई अपनी खेत की सेहत का ध्यान रखते हैं, अपने मन मुताबिक फसल लेना चाहते हैं, कम समय, कम लागत में अधिक मुनाफा देने वाली खेती करना चाहते हैं, वे कृषि यंत्रों का सहारा लेते हैं। इन कृषि यंत्रों में सबसे पहले हैरो का इस्तेमाल किया जाता है।

पॉवर हैरो एक बार में ही मिट्टी जुताई, ढेले फोड़ने पाटा चलाने का काम करता है। पॉवर हैरो या अन्य हैरो में वर्टिकल टाइन के कई सेट लगे होते हैं। पॉवर हैरो के टाइन का पहला सेट खेत की मिट्टी को पलटने का काम करता है तो दूसरा सेट उस मिट्टी के ढेले को फोड़ने और उसे महीन बनाने का करता है।

हैरो का प्रयोग करने से खेत की जमीन समतल ही हो जाती है। गहरी जुताई के कारण खेत में नमी अधिक समय तक रहती है। इससे बीजों का अंकुरन अच्छी तरह से हो सकता है। इस तरह से हैरो से एक या दो बार की जुताई से खेत बुवाई के लिए तैयार हो जाता है। खेत में नर्सरी लगाने के लिए हैरो की एक ही जुताई काफी होती है। उसके बाद खाद प्रबंधन करके बुवाई शुरू कर दी जाती है।

हैरो की खरीद पर कितनी सब्सिडी मिलती है :- सरकार द्वारा कृषि यंत्रों के उपयोग करके फसल को बढ़ाने तथा किसान भाइयों की आमदनी बढ़ाने के लिए कई योजनाएं चलाई जा रहीं है। इन योजनाओं में कृषि यंत्रों की खरीद पर सब्सिडी भी दिया जाना शामिल है।

1.यह सब्सिडी गरीब व दलित किसानों व छोटे काश्त वो किसानों को अलग. -अलग तरह से दी जाती है।

2.प्रत्येक राज्य ने अपने राज्य के किसानों की सुविधा के लिए सब्सिडी के अलग-अलग नियम व कानून बना रखे हैं। इन नियमों व कानूनों के बारे में जानकार या सम्बन्धित विभाग के अधिकारियों से पूरी प्रक्रिया को जानकर आवेदन करके उसका लाभ प्राप्त करें।

3.हैरो की खरीद के बारे में जानकार लोगों का अनुमान है कि अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति के किसानों और महिला किसान को हैरो की खरीद पर 63 हजार रुपये की सब्सिडी मिलती है। इसके अलावा सामान्य किसानों को हैरो की खरीद पर 50,000 रुपये की सब्सिडी मिलती है। विस्तृत जानकारी विभागीय अधिकारियों से प्राप्त करें।

किराये पर भी चलाकर उठा सकते हैं लाभ:- कृषि यंत्र काफी महंगे होते हैं और हमारे देश में छोटी काश्त वाले किसानों की संख्या अधिक है, जो इन महंगे कृषि यंत्रों को आसानी से नहीं खरीद सकते हैं। इनकी खरीद के लिए सरकार द्वारा लाभ दिये जाने के लिए शर्तें भी ऐसी होती हैं जो अधिकांश किसान पूरी नहीं कर पाते हैं। इसके बावजूद उन्हें इन कृषि यंत्रों की सेवाओं की जरूरत होती है। इसके लिए सरकार ने भी सेवा केन्द्र खोल रखे हैं जहां किराये पर कृषि यंत्रों की सेवाएं ली जा सकतीं हैं। इसके साथ ही कुछ हमारे किसान भाई भी अपनी क्षमता के अनुसार कृषि यंत्रों को खरीद कर उन्हें किराये पर चला कर लाभ कमाते हैं। जहां हैरो के मालिक को किराया मिलता है वहीं सेवाएं लेने वाले किसानों को जल्दी व बिना मेहनत के खेत तैयार करने का लाभ मिलता है।

जुताई का राजा रोटावेटर

रोटावेटर ट्रैक्टर के साथ चलने वाला जुताई का आधुनिक यंत्र है। जमीन पर बढ़ते फसलों के बोझ की स्थिति में यह सूखे या गीली जमीन में जुताई करने का उपयुक्त माध्यम है। इसका खास लाभ किभी फसल के कूडे या डंठलों को जमीन में मिलाने के लिए किया जाता है। एक ही जुताइ में खेत को तैयार करने वाली परिस्थितियों के लिए यह बेहद कारगर मशीन है।

रोटावेटर मक्का,गेहूं,धान,गन्ना आदि के अवशेष को हटाने अथवा इसके मिश्रण करने के लिए उपयुक्त माना जाता है। रोटावेटर के उपयोग से मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार भी आता है। इसके अलावा धन,लागत,समय और ऊर्जा आदि की भी बचत होती है।

रोटावेटर के खास तरीके से डिजाइन किए गए ब्लेडों की खास बनावट रोटावेटर को एक मजबूत मशीन का आकार देती है। आज कई कंपनियां अलग- अलग प्रकार के रोटावेटर मशीनें बना रही हैं, जो किसानों का खेती का काम आसान कर रही हैं।

वर्तमान समय में दो प्रकार के रोटावेटर प्रचलन में हैं। पहला टिलमेट और दूसरा सायल मास्टर रोटावेटर :-

सायल मास्टर रोटावेटर:- सायल मास्टर रोटावेटर को किसी भी तरह की मिट्टी में इस्तेमाल किया जा सकता है। इसे कठोर और मुलायम दोनों तरह की मिट्टी के इस्तेमाल के लिए खासतौर से डिजायन किया गया है। इसकी डिजाइन मजबूत होने के कारण इसमें कम्पन कम होता है और यही कारण है कि ट्रक्टर पर भी भार कम पड़ता है। यह अकेली ही ऐसी मशीन है जिसमें दोनों तरफ बैरिंग लगे हैं।यही कारण है कि यह सूखी और गीली मिट्टी दोनों पर ही काम करके अच्छे नतीजे देता है। अच्छी क्वालिटी होने की वजह से इसके रखरख. ाव पर भी कम खर्च आता है। इसका बाक्स कवर खेत में काम करते समय गीयर बाक्स को पत्थरों व दूसरी बा. हरी चीजों से बचाता है।साइड स्किड असेंबली के साथ जुताई की गहराई में 4 से 8 इंच तक का फेरबदल किया जा सकता है।

टिलमेट रोटावेटर:- इसको खास तरीके से डिजाइन किया गया है। इसमें बोरान स्टील के ब्लेड लगे होते हैं। इसमें एक गियर ड्राइव भी लगा हो. ता है जिसकी वजह से यह लंम्बे समय तक चलता है। इसमें ट्रेनिंग बोर्ड को एडजस्ट करने के लिए ऑटोमैटिक सिंप्रग लगे होते हैं। इसका भी प्रयोग गीले और सूखे दोनों ही स्थानों पर कर सकते है। रोटाबेटर अन्य जुताई मशीनों की तुलना में डीजल की भी काफी बचत करता है। यह मिट्टी को तुरंत तैयार कर देता है जिससे पिछली फसल की मिट्टी की नमी का पूर्णतया उपयोग में आ जाता है। रोटावेटर का उपयोग 125 मिमी -150 मिमी की गहराई तक की मिट्टी के जुताई के लिए उपयुक्त है। इससे बीज की बुआई में आसानी रहती है। इससे जुताई अन्य यंत्रों के मुकाबले चौथाई समय में ही हो जाती है। इसका उपयोग फसलों के अवशेषो को हटाने में भी किया जाता है। इसे चलाते समय खेत में घुमाने में भी आसानी रहती है।

सूखे बुंदेलखंड में प्रेम सिंह ने खिलाई फुलवाडी

प्राकृतिक संकटों से ग्रस्त बुंदेलखंड में कृषि के सस्टेनेबल मॉडल को देख के आश्चर्य होता है। यह मॉडल विकसित किया पढ़े लिखे युवा किसान प्रेम सिंह ने। दर्शनशास्त्र में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से M.A. की परीक्षा पास करने के बाद उनके मन में कृषि, किसान और किसानी को लेकर कई तरह के सवाल थे। इन सवालों का जवाब तलाशते तलाशते वह खुद किसान बन गए। परिवारों ने भी प्रारंभिक दौर में उनका साथ नहीं दिया क्योंकि वह चाहते थे कि पढ़ लिख कर बेटा एक अदद सरकारी नौकर बन जाए। आज उनके यहां अनेक शोधार्थी विदेशों से आते हैं और खेतीवाड़ी का ज्ञान प्राप्त करते हैं।उनके पास खेती किसानी की कोई डिग्री नहीं है लेकिन वह लाभकारी खेती करके दिखाते हैं।किसान प्रेम सिंह कहते हैं कि उन्हें सरकारी नौकरी में इसलिए नहीं जाना था कि वहां कभी राजनीतिक दबाव कभी अफसरों का दबाव और दबावों के बीच ना चाहते हुए भी अन्याय करने की प्रवृत्ति वह अपना ही नहीं सकते थे। दूसरा अहम सवाल यह था की सरकारी नौकरियों में शीर्ष मानी जाने वाली आईएस-पीसीएस कुछ जितना वेतन मिलता है उतने धन की व्यवस्था यदि कृषि से और गांव में रहकर हो जाए तो उन्हें वह ज्यादा माकूल नजर आया। बस यहीं से उन्होंने अपनी किसानी और लाभकारी किसानी की जीवन यात्रा शुरू करदी। उत्तर प्रदेश के बुंदेलखंड स्थित बांदा जनपद का छोटा सा गांव है बड़ोखर खुर्द। यही किसान प्रेम भाई का बगीचा और फार्म हाउस है। उनकी बगिया में बैठकर लोगों को वही आनंद आता है जो किसी सिद्ध योगी के आश्रम में पहुंच कर महसूस होता है। उनके आवासीय परिसर का डिजाइन भी बेहद कम कीमत वाला है। वह लाभकारी एवं सस्टेनेबल फार्मिंग के लिए कृषि, पशु और बाग तीनों का सामंजस्य जरूरी मानते हैं। वह कहते हैं जब तक यह तीनों कंपोनेंट नहीं होंगे खेती लाभकारी नहीं हो सकती।मल्टीनेशनल कंपनियों के महंगे उत्पाद खरीद कर किसान उनकी तिजोरियां भर रहा है और खुद कंगाल हो रहा है। दूसरे शब्दों में कहूं तो 1960 के दशक में किसान भुखमरी के शिकार होकर मरते थे। आज अन्न के भंडार जरूरत से ज्यादा भरे हुए हैं उसके बाद भी किसान मर रहे हैं और 60 के दशक से ज्यादा मर रहे हैं। पिताजी के लाख मना करने के बाद भी उन्होंने खेती के विभिन्न मॉडलों पर काम किया।अंत में उन्होंने जो मॉडल बनाया उसे नाम दिया आवर्तनशील खेती।

क्या है आवर्तनशील खेती:- किसान प्रेम सिंह ने 1986 में खेती शुरू की। उन्होंने पाया कि सभी किसान रासायनिक खेती की ओर उन्मुख हैं।इसमें हर तरह से किसान दुकानदार और बड़ी-बड़ी कंपनियों के उत्पादों पर निर्भर था। इसके लिए मोटी रकम भी चाहिए थी।उन्हें सुजाह यदि किसान इन मल्टीनेशनल कंपनियों पर अपनी निर्भरता कम कर दे और उत्पाद से वाजिब कीमत मिल जाए तो लाभ कई गुना बढ़ सकता है। बस इसी फार्मूले पर उन्होंने काम को आगे बढ़ा दिया। इसके लिए उन्होंने गोबर की खाद तालाबों का निर्माण जैसे प्रयोग शुरू किए ताकि सूखाग्रस्त बुंदेलखंड में पानी की कमी के बाद भी बेहतर उत्पादन लिया जा सके।

1989 में खेती से उन्हें और उनके आसपास के किसानों को लाभ होने लगा। उनका आत्मविश्वास भी तेजी से बड़ा लेकिन इसमें आमूलचूल बदलाव आया जब वह है कर्नाटक में एक कार्यक्रम में शिरकत कर रहे थे और एक छोटी सी बच्ची ने पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम आजाद से सवाल किया कोई भी व्यक्ति अपने बच्चों को किसान क्यों नहीं बनाना चाहता। उनके पास इसका कोई ठोस जवाब नहीं था। बस यहां किसानी को लेकर जुनून प्रेम सिंह में भर गया और उन्होंने ठान लिया क्यों है कृषि को लाभका. री बनाने के मॉडल पर ही काम करेंगे ताकि किसान अपने बच्चे को किसान ही बनाने की सोचे और खेती से उसके परिवार की जरूरत है भी आसानी से पूरी हों। आज वह हर तरह की जै. विक खेती करते हैं और उनके उत्पाद दिल्ली के बड़े बड़े मॉल में उचित कीमत पर बिकते हैं। मथुरा जैसे छोटे शहरों में भी उनके जैविक उत्पादों की मांग बढ़ने लगी है। वह अपने मॉडल में खेती को बराबर के तीन हिस्सों में बांटते हैं।एक हिस्से में खेती दूसरे में बाग. और तीसरे में पशु। पशु वाले हिस्से में पशुओं के रहने और उनके चारे का इंतजाम किया जाता है।

पपीते की खेती कर अंकित बने सफल किसान दूसरे कृषकों को कर रहे हैं प्रोत्साहित

कहते हैं जहां चाह वहां राह। राज्य शासन के उद्यानिकी विभाग के सहयोग से बलरामपुर जिले के विकासखण्ड रायपुर के रहने वाले अंकित जैस्वाल इस कहावत के पर्याय बन गये हैं।युवा अंकित की यह सफलता चर्चा का विषय बनने के साथ ही क्षेत्रवासियों को प्रोत्साहित भी कर रहे है। अंकित जैस्वाल ने राष्ट्रीय बागवानी मिशन के अन्तर्गत उद्यान विभाग के सहयोग से परम्परागत फसलों की खेती से इतर वृहद क्षेत्र में पपीतों की खेती की है जिससे उन्हें अच्छी आय प्राप्त हो रही है। अंकित के पिता श्यामलाल भी सफल कृषक हैं तथा अंकित ने उनके पद चिन्हों में चल कर सफलता अर्जित की है। प्रयोगधर्मी एवं प्रगतिशील कृषक के रूप में अंकित की छवि कृषकों को प्रोत्साहित कर रही है। अंकित ने बताया हमारा परिवारिक पेशा खेतीबाड़ी है,पपीते की खेती करने से पहले हम परम्परागत रूप से कृषि कार्य कर रहे थे।कृषि में नवाचार तथा तकनीकी ज्ञान के आभाव में उत्पादन इतना कम था कि परिवार का खर्च चलाना मुश्किल हो गया था। पारिवारिक जिम्मेदारियां बढ़ने से परेशानी बढ़ रही थी,भविष्य की चिन्ता ने मुझे कृषि कार्यो के प्रति हतोत्साहित किया था। किन्तु जब उद्यानिकी विभाग द्वारा राष्ट्रीय बागवानी मिशन के अंतर्गत पपीते की खेती की जानकारी तथा जरूरी सहयोग प्रदान करने की बात कही गई तब मैंने पपीते की खेती करने का निर्णय लिया।अंकित आगे बताते हैं कि उद्यान विभाग ने पपीते के पौधे उपलब्ध कराये जिसे मैंनें आधे एकड़ भूमि में लगाये तथा इसकी लागत लगभग 5 हजार रूपये थी। बात करते हुए अंकित के चेहरे की मुस्कान बता रही थी कि पपीते की अच्छी पैदावार ने उन्हें हौसला दिया है तथा उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार हो रहा है।अंकित को अब तक 15 हजार की बचत हो चुकी है तथा पपीते की खेती उनके फायदे का सौदा बन गयी है।अंकित ने कहा कि उद्यानिकी फसलो से जुड़े खेती में असीम संभावनाएं हैं, कृषकों को उद्यानिकी फसलों की खेती को अपनाना चाहिए। अंकित ने प्रशासन के कृषकोन्मुखी भावना के प्रति सम्मान व्यक्त करते हुए कहा कि कृषक जानकारी के आभाव में न भटके बल्कि विभाग से सम्पर्क कर शासकीय योजनाओं का भरपूर लाभ लें।

प्रसंस्करण पर जोर:-

किशन प्रेम सिंह कहते हैं कि किसानों को अपनी फसलें सीधे-सीधे न बेचकर उनका प्रसंस्करण करना चाहिए। अगर गेहूं उगाते हैं तो उसका दलिया बनाकर बेचें, आटा बनाकर बेचें। उनके प्रयासों का लाभ अकेले उनके गांव को नहीं बल्कि समूचे क्षेत्र को मिल रहा है।

किसान विद्यापीठ की स्थापना:-

जो किसान खेती करने में असफल सिद्ध हो रहे हैं उन किसानों को किसान विद्यापीठ के माध्यम से ट्रेनिंग प्रदान करने के अलावा लाभकारी खेती के गुर सिखाए जाने का काम भी उन्होंने शुरू किया है।

Digest

Processed yet good

Ram Singh broke the debt cycle by innovating a new farming style in Bundelkhand that is organic and highly profitable

इन तरकीबों से होगा आलू का बंपर उत्पादन

आलू मोटी लागत और कमाई वाली फसल है। अच्छी उपज के लिए किसानों को सर्व प्रथम जिस जमीन में आलू लगाना है उसमें खेत की तैयारी के समय गोबर की कम्पोस्ट खाद मिला लेनी चाहिए। यह काम भी बुबाई से कमसे कम 15 दिन पूर्व करें। यदि संभव होतो खाद को मिलाकर खेत में सिंचाई कर दें। उर्वरकों का प्रयोग मृदा जांच के आधार पर करने से लागत को काफी कम किया जा सकता है और मुनाफे को बढ़ाया जा सकता है। आलू में चूंकि कंद बनते हैं, लिहाजा बलुई दोमट मिट्टी में कंद का विकास ठीक होता है। जुताई एवं पाटा लगाने का काम सतत रूप से करने से मिट्टी भुरभुरी हो जाएगी।

उर्वरक प्रबंधन-

आलू की अच्छी पैदावार के लिए उर्वरक संस्तुत मात्रा में ही डालें। यदि मृदा परीक्षण नहीं कराया है तो 180 किलोग्राम नत्रजन, 80 किलोग्राम फास्फोरस, 100 किलोग्राम पोटास, 15 किलोग्राम शूक्ष्म पोषक तत्व एवं 10 किलोग्राम जिंक सल्फेट को जुताई में मिला दें। जिंक और फास्फोरस को एक साथ न डालें अन्यथा कीमती फास्फोरस बेकार हो जाएगा।

बुवाई का समय-

अगेती फसल की बिजाई 15 सितंबर के आसपास हो जाती है लेकिन समय से बिजाई के लिए 15 अक्टूर से माह के अंत तक बुवाई हो सकती है। बुवाई में जल्दबाजी या देरी भी उत्पादन को प्रभावित करती है।

अन्यथा कीमती फास्फोरस बेकार हो जाएगा।

बीज दर-

40 से 50 ग्राम वजन, ज्यादा आंखों वाले अधिकतम 4 सेण्टीमीटर आकार वाले आलू को बीज के लिए प्रयोग में लाया जाता है। एक हैक्टेयर के लिए 30 से 35 कुंतल बीज की जरूरत होती है।

टीपीएस विधि- आलू के लिए आलू को ही बीज के रूप में बोने की परंपरा चली आ रही है लेकिन टीपीएस यानी ट्रू पोटेटो सीड से भी आलू लगाया जा सकता है। इस विधि में बेहद बारीक बीज की नर्सरी डालकर पौध तैयार होती है। बाद में इसे रोपा जाता है। आलू के झौरों पर सीधे बीज बुवान करके भी आलू के भारी भरकम बीज के लदान आदि से बचा जा सकता है। साथ ही नर्सरी जनित रोगों का आसानी से नियंत्रण हो सकता है लेकिन इस दिशा में काम आगे नहीं बढ़ पाया है।

बीजोपचार-

आलू में कई तरह के रोगों का संक्रमण होता है। फसल को इससे बचाने के लिए किसानों को चाहिए कि वह बीज विश्वसनीय स्थान से खरीदें। इसके अलावा बीज को कोल्ड से लाने के बाद कमसे कम सात दिन छांव में रखें। इसके बाद उसे पक्के फर्श पर फैलाकर स्प्रे मशीन से दो से तीन बार आलू को पलट पलट कर किसी अच्छे फफूंदी नाशक का छिड़काव पानी में घोलकर करें। हर दवा के पैकिट पर प्रयोग की विधि एवं मात्रा लिखी होती है। कार्बन्डाजिम, बाबस्टीन जैसे रसायनों की अलग अलग मात्रा प्रयोग में लाई जाती है लिहाजा जो दवा प्रयोग में लाई जा रही है उसे उसी अनुपात में घोल बनाकर प्रयोग किया जाए।

बुवाई के लिए आधुनिक मशीनें ही हर जगह प्रयोग में लाई जा रही हैं। उनमें आलू डालने व कूंड की दूरी एक समान रहती है। आलू लगाते समय यदि खेत में नमी कम है तो बुबाई के दूसरे दिन बेहद हल्की सिंचाई करने से अंकुरण अच्छा होता है। टपक सिंचाई के खेती करते समय कूंडों के बीच का फासला बढ़ाया जाता है ताकि आकार मोटा हो और उत्पादन में इजाफा हो।

सिंचाई प्रबंधन-

आलू में मुख्य काम समय से सिंचाई का होता है। आलू में यदि समय से पानी नहीं लगता तो उत्पादन बेहद कम हो सकता है क्योंकि आल में ज्यादातर पानी ही होता है। पहली सिंचाई 7 से 10 दिन, दूसरी सिंचाई 12 से 15 दिन, तीसरी सिंचाई 22 से 25 दिन बाद शाखाएं बनते समय करें।

इसकी समय उर्वरक का बुरकाव करें।

खरपतवार नियंत्रण-

इसके लिए चुनिंदा दवा बाजार में आती हैं। यदि मजदूर मिलने की समस्या न हो तो खुरपी से खरतवारों को निकालने के साथ हल्की मिट्टी चढ़ाने का काम भी साथ के साथ किया जा सकता है।

रोग नियंत्रण-

आलू में कई रोग लगते हैं। इनमें मुख्य रोग अगेती और पछेती झुलसा रोग होते हैं। झुलसा पत्तियों, डंठलों एवं कंद तीनों को प्रभावित करता है। कत्थई एवं काले धब्बे पौधे और कंद पर बन जाते हैं। रोग के लक्षण दिखने के साथ ही मैन्कोजेब 0.2 प्रतिशत को 2 ग्राम प्रति लीटर पानी के अनुपात में घोल बनाकर खड़ी फसल पर छिड़कना चाहिए। भयंकर प्रकोप की दशा में मेटालेक्सिल युक्त किसी भी दवा का 0.25 प्रतिशत घोल का पैकेट पर अंकित मात्रा के अनुपात में छिड़काव करें।

कामन स्कैब-

इस रोग का दुष्प्रभाव उत्पादन पर तो नहीं होता लेकिन कंद बदरंग हो जाता है और उसकी कीमत बेहर कम हो जाती है। कंदों पर धब्बे बन जाते हैं। यह रोग बीज जनित है लिहाजा बीजोपचार भण्डारण एवं बुवाई से पूर्व करना जरूरी है। आलू के खेत में दोबारा आलू न लगाएं। फसल बदल कर बोएं।

माहू कीट-

माहू आलू की फसल को प्रत्यक्ष रूप से नुकसान नहीं पहुंचाता। फसल पर जैसे ही माहू का प्रभाव ज्याद दिखे तो डंठलों को काट देना चाहिए। यदि फसल देरी से लगाई गई है और मालू का प्रभाव पांच प्रतिशत से ज्यादा है तो नीम आयल 0.15 प्रतिशत एवं डाईमेथोयेट 30 प्रतिशत की एक लीटर मात्रा का एक हजार लीटर में घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए।

पात फुदका भी आलू की फसल को प्रभावित करता है। यह हरे रंग की टिड्डी नुमा होता है। इसकी रोकथाम के लिए मोनोक्रोटोफास 40 ईसी की 1.2 लीटर या मिथायल आक्सीडेमेटान 25 ईसी की एक लीटर मात्रा को एक हजार लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

विषाणु जनित रोगों को पहचानने के लिए यदि पत्तों पर हरे पीले रंग के ध्ब्बे पड़ जाएं और पत्ते मुड़कर छोटे हो जाएं तो समझ लेना चाहिए कि बीमारी विषाणु जनित है। प्रारंभ में रोग ग्रस्त पौधों को उखाड़कर फेंक दें। इसके अलावा डाईमिथोयेट 30 ईसी की एक लीटर मात्रा को एक हजार लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। खुदाई के लिए 80 दिन बाद फसल के पत्तों का रंग बदलने लगता है। भण्डारण के लिए खुदाई से 10 दिन पूर्व डंठलों को काट दिया जाता है। कच्चा आलू बेचने के लिए छिलका थोड़ा पक्का होने पर खुदाई की जा सकती है। इस श्रेणी का आलू साथ के साथ मण्डी भेज दिया जाता है।

पत्तागोभी की खेती की सम्पूर्ण जानकारी

जो किसान भाई पत्ता गोभी यानी बंद गोभी की खेती करना चाहते हैं, वे खेती की अन्य सभी तैयारियों के साथ कीट व रोग प्रबंधन के लिये विशेष रूप से कमर कस लें। नकदी फसल की सब्जी की यह खेती बहुत लाभकारी है लेकिन इसमें कीट व्याधियां इतनी अधिक लगतीं हैं कि उनके लिए प्रत्येक पल सतर्क रहना होता है। जरा सी चूक पर फसल के खराब होने में देरी नहीं लगती है। पहाड़ी व मैदानी क्षेत्रों में होने वाली पत्ता गोभी का सबसे बड़ा लाभ यह है कि बाजार में कीमत घटने के समय खेत में रोक भी सकते हैं, महंगी होने पर काट कर बेच भी सकते हैं। पत्ता गोभी का सबसे अधिक उपयोग सब्जी बनाने में होता है। इसके अलावा सलाद, कढ़ी, अचार, स्ट्रीट फूड, पाव भाजी, आदि चाट आइटम बनाने के भी काम में लाया जाता है। पत्ता गोभी में 1.8 प्रतिशत प्रोटीन,0.1 प्रतिशत वसा, 4.6 प्रतिशत कार्बोहाइड्रेट, कैल्शियम, फास्फोरस, आयरन के साथ बिटामिन ए व विटामिन बी-1, विटामिन बी-2 तथा विटामिन सी पाया जाता है। पत्ता गोभी पेट के रोगों के साथ शुगर डाइबिटीज में लाभदायक होता है। आइए जानते हैं इसकी खेती के बारे में।

मिट्टी व जलवायु-

पत्ता गोभी की खेती वैसे तो सभी प्रकार की मिट्टी में की जा सकती है लेकिन जल निकास वाली दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त होती है। पत्ता गोभी की खेती के लिये सामान्य जलवायु की जरूरत होती है। अधिक सर्दी और पाले से पत्तागोभी को नुकसान हो सकता है। गांठों के विकास के समय 20 डिग्री के आसपास तापमान होना चाहिये। वर्षा के समय तापमान घटने से पत्ता गोभी की गांठ अच्छी तरह से विकसित नहीं हो पाती है और स्वाद भी खराब हो जाता है।

खेत की तैयारी कैसे करें-

किसान भाइयों को चाहिये कि जलनिकासी वाले खेत में सबसे पहले हैरों आदि से खेत की मिट्टी को पलटवा दें जिससे पूर्व की फसल के अवशेष और खरपतवार उसमें दब जायें और खेत को एक सप्ताह के लिए खुला छोड़ दें। इस बीच सिंचाई कर दें। जब दुबारा खरपतवार उगती दिखाई दे तो उसकी दो तीन बार गहरी जुताई कर देनी चाहिये तथा पाटा चला दें। इससे खेत की मिट्टी भुरभुरी हो जाती है।

खाद एवं उर्वरक का प्रबंधन-

आखिरी जुताई के पहले खेत में प्रति हेक्टेयर के हिसाब से 20 से 25 टन गोबर की खाद या वर्मी कम्पोस्ट खाद डालनी चाहिये। इसके बाद जब बुवाई होनी हो उससे पहले खेत में 150 किलोग्राम नाइट्रोजन, 60 किलो फास्फोरस, 60 किलो पोटाश लाकर रख लें। बुवाई से पहले आखिरी जुताई के समय फास्फोरस और पोटाश तो पूरी मात्रा डाल दें और नाइट्रोजन की केवल एक तिहाई मात्रा ही डालें। बची हुई नाइट्रोजन को आधा-आधा बांट लें। उसमें से एक हिस्सा 30 दिन के बाद और दूसरा हिस्सा 50 दिन के बाद खेत में खड़ी फसल पर छिड़क दें।

लाभकारी अच्छी किस्में-

पत्ता गोभी के रंग, रूप आकार व पैदावार के आधार पर इसकी किस्मों को कई भागों में बांटा गया है, जो इस प्रकार हैं:-

कौन-कौन से गुण होते हैं लेमन ग्रास में-

1.अगेती किस्में: अगेती फसल के लिए उपयुक्त किस्में गोल्डन एकर, प्राइड आफ इंडिया, पूसा मुक्ता एवं मित्रा, मीनाक्षी आदि प्रमुख हैं।

2.मध्यम किस्में: मध्यम समय में खेती करने के लिए उपयुक्त किस्में अर्ली ड्रमहेड, पूसा मुक्त, आदि प्रमुख हैं।

3.पछेती किस्में: लेट ड्रम हेड, डेनिस वाल हेड, मुक्ता, पूसा ड्रम हेड, रेड कैबेज, पूसा हिट, टायड, कोपेन हेगन, गणेश गोल, हरी रानी कोल आदि प्रमुख हैं।

4.इनके अलावा माही क्रांति, गुड्डी वाल 65, इंदु, एसएन 183, बीसी 90 भी प्रमुख किस्में हैं।

बीज की मात्रा व अन्य जानकारियां-

किसान भाइयों अगेती किस्म की फसलों को लेने के लिए प्रति हेक्टेयर 500 ग्राम की बीज की आवश्यकता होती है जबकि पछेती खेती के लिए 400 ग्राम के आसपास ही जरूरत होती है।

इसका कारण यह है कि अगेती किस्म की पौध लगाने में मरने वाले पौधों की संख्या अधिक होती है। इसलिये बीज अधिक लगाया जाता है।

ड्रिप सिंचाई क्या है

पत्ता गोभी की फसल साल में दो बार की जा सकती है। इसकी फसल बरसात व गर्मी के लिए अलग-अलग समय पर की जाती है।

1.गर्मी के लिए पत्ता गोभी की बिजा. ई नवम्बर, दिसम्बर व जनवरी में की जाती है।

2.बरसात के समय पत्ता गोभी तैयार करने के लिए बिजाई मई, जून व जुलाई में की जाती है।

3.अगेती खेती यानी गर्मी की फसल के लिए अगस्त-सितम्बर के मध्य तक नर्सरी में बीज की बुवाई कर देनी चाहिये। पछेती फसल के लिए सितम्बर व अक्टूबर कर देनी चाहिये। इसी तरह बरसात की फसल के लिए
अगेती फसल के लिए मार्च अप्रैल में नर्सरी की तैयारी कर लेनी चाहिये और पछेती किस्मों की फसल के लिए मई-जून में नर्सरी तैयार करनी चाहिये।

नर्सरी की तैयारी व पौधारोपण

एक मीटर लम्बी और ढाई मीटर चौड़ी क्यारी बनायें। इसमें गोबर की खाद और वर्मी कम्पोस्ट का इस्तेमाल करते हुए बीज की बुवाई करनी
चाहिये। पौधशाला ऊंचाई पर बनानी चाहिये। लगभग एक माह में पौध तैयार हो जाती है। इसके बाद खेत में क्यारी बनाकर पौधों का रोपण करना चाहिये। रोपते समय पौधों की लाइन की दूरी एक फुट होनी चाहिये और पौधों से पौधों की दूरी भी एक फुट ही होनी चाहिये।

सिंचाई का प्रबंधन किस प्रकार करें

बुवाई के एक सप्ताह बाद पहली सिंचाई करनी चाहिये। पत्ता गोभी की अच्छी पैदावार के लिए खेत में नमी हमेशा रहनी चाहिये। बरसात के समय किसान भाई आप खेत की स्थिति के अनुसार सिंचाई करें। सीजन में वर्षा समय पर न होने पर प्रत्येक पखवाड़े में एक बार सिंचाई अवश्य करायें। गर्मी के मौसम मे प्रत्येक सप्ताह में खेतों की सिंचाई करायें।

खरपतवार का नियंत्रण कैसे करें

खरपतवार को नियंत्रण करने के लिए किसान भाइयों को खेत की कम से कम चार बार निराई गुड़ाई करनी चाहिये। निराई गुड़ाई करते समय यह ध्यान रखना चाहिये कि खरपतवार निकालने जो मिट्टी जड़ों से हट जाती है उसे फिर से चढ़ा देना चाहिये। इसके अलावा खरपतवार नियंत्रण के लिए पेंडीमेथालिन की 3 लीटर मात्रा को एक हजार लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर छिड़काव करें।

कीट एवं व्याधियों की रोकथाम

किसान भाइयो पत्ता गोभी की खेती में कीट एवं इल्लियों की रोकथाम सबसे जरूरी है। पत्ता गोभी में शुरू से ही कीटों का लगना शुरू हो जाता है। यदि समय पर इनका नियंत्रण न किया जा सकता तो फसल पूरी तरह से चौपट हो सकती है। फसलों के लिए सबसे हानिकारक इल्लियों, लूपर्स और कीट अनेक प्रकार हैं,इनमें से प्रमुख कुछ इस प्रकार हैं:-

1.आरा मक्खी
2.फली बीटल
3.पत्ती भक्षक लटें
4.हीरक तितली
5.गोभी की तितली
6.तम्बाकू की इल्ली

उपचार या रोकथाम:

इन सभी इल्लियों व कीटों को नियंत्रण करने के लिए नीम की निबौली का अर्क 4 प्रतिशत या बीटी -1 एक ग्राम प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिडकाव करना चाहिये। जो किसान भाई इन्सेक्टीसाइड से नियंत्रण करना चाहें कवो स्पिनोसैड 43 एससी
1 मिलीलीटरप्रति 4 लीटर पानी में या एमामेक्टिन बेंजोएट 5 एससी 1 ग्राम प्रति 2 लीटर पानी में या क्लोरऐन्ट, निलिमोल 18.5 एसासी एक
मिली लीटर प्रति 10 लीटर पानी में या फेनवेलहेट 20 ईसी 1.5 मिलीलीटर प्रति 2 लीटर पानी में घोलकर
छिड़काव करें।

पत्ता गोभी के पत्तों को चूस कर पौधे को कमजोर बनाने वाला एक कीट मोयला भी है, जिसकी रोकथाम करने के लिए डाइमेथेएट 30 ईसी
2.0 मिलीटर प्रति लीटर पानी या इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एसएल
1 मिलीलीटर प्रति 3 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

आर्द्रगलन रोग: इस रोग को डम्पिंग आफ भी कहते हैं। यह रोग अगेती किस्मों की नर्सरी में लगना शुरू होता है। इससे पौधे मरने लगते हैं। इसकी रोक थाम के लिए थाइम या कैप्टान 3 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करना चाहिये। रोग के संकेत मिलने पर बोर्डो मिश्रण 2:2:50 या कॉपर आक्सीक्लोराइड को 3 ग्राम प्रतिलीटर पानी में मिलाकर
स्प्रे करें।

काला सड़न भी बीजों की क्यारी में या नई पौध में लगता है। इससे फूलों व डंठलों में सड़न पैदा होती है। इसकी रोकथाम पत्ता गोभी की बीजों की बुवाई से पहले स्ट्रेप्टोसाक्लिन 250 ग्राम या बाविस्टिन एक ग्राम प्रतिलीटर पानी में घोल कर 2 घंटे तक भिगोकर रखें। उसे छाया में सुखाने के बाद ही बुआई करें। बाद में रोग के संकेत मिलने पर इन्हीं दोनों दवाओं का छिड़काव करें।

फसल की कटाई:

किसान भाइयों जब फसल तैयार हो जाये तब आपको फसल की कटाई

यानी पत्ता गोभी की तुड़ाई बाजार भाव देख कर करें। अधिकांश किस्मों की फसलें 75 से 90 दिनों के भीतर तैयार हो जातीं हैं। जबकि कुछ ऐसी किस्में भी हैं जिनकी फसल 55 दिन में ही कटाई के लिए तैयार हो जाती है। पत्ता गोभी के पूरा बड़ा होने पर ही उसकी कटाई करनी चाहिये। पत्ता गोभी अच्छी तरह कड़ा होने पर ही काटा जाना चाहिये। किसान भाइयों पत्ता गोभी की कटाई का समय ठंडा मौसम ही सबसे उपयुक्त होता है। इसको कटाई के बाद छाया या नमी वाली जगह में रखना चाहिये। जिससे काफी समय तक ताजा बना रहे। जब पत्ता गोभी कड़ा हो जाये और उसके पत्ते अलग अलग होने लगे तो तुरन्त काट लेना चाहिये। किसान भाइयों पत्ता गोभी की पैदावार प्रति हेक्टेयर कम से कम 50 टन तो होती ही है। अच्छी किस्म और उचित प्रबंधन वाली खेती से पत्ता गोभी को प्रति हेक्टेयर 70 से 80 टन की भी पैदावार प्राप्त की जा सकती है।

ड्रिप सिंचाई क्या है

पत्ता गोभी की फसल साल में दो बार की जा सकती है। इसकी फसल बरसात व गर्मी के लिए अलग-अलग समय पर की जाती है।

1.गर्मी के लिए पत्ता गोभी की बिजा. ई नवम्बर, दिसम्बर व जनवरी में की जाती है।

नर्सरी की तैयारी व पौधारोपण

एक मीटर लम्बी और ढाई मीटर चौड़ी क्यारी

सिंचाई का प्रबंधन किस प्रकार करें

बुवाई के एक सप्ताह बाद पहली सिंचाई करनी चाहिये। पत्ता गोभी की अच्छी पैदावार के लिए खेत में नमी हमेशा रहनी चाहिये। बरसात के समय किसान भाई आप खेत की स्थिति के अनुसार सिंचाई करें। सीजन में वर्षा समय पर न होने पर प्रत्येक पखवाड़े में एक बार सिंचाई अवश्य करायें। गर्मी के मौसम मे प्रत्येक सप्ताह में खेतों की सिंचाई करायें।

खरपतवार का नियंत्रण कैसे करें

खरपतवार को नियंत्रण करने के लिए किसान भाइयों को खेत की कम से कम चार बार निराई गुड़ाई करनी चाहिये। निराई गुड़ाई करते समय यह ध्यान रखना चाहिये कि खरपतवार निकालने जो मिट्टी जड़ों से हट जाती है उसे फिर से चढ़ा देना चाहिये। इसके अलावा खरपतवार नियंत्रण के लिए पेंडीमेथालिन की 3 लीटर मात्रा को एक हजार लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर छिड़काव करें।

कीट एवं व्याधियों की रोकथाम

किसान भाइयो पत्ता गोभी की खेती में कीट एवं इल्लियों की रोकथाम सबसे जरूरी है। पत्ता गोभी में शुरू से ही कीटों का लगना शुरू हो जाता है। यदि समय पर इनका नियंत्रण न किया जा सकता तो फसल पूरी तरह से चौपट हो सकती है। फसलों के लिए सबसे हानिकारक इल्लियों, लूपर्स और कीट अनेक प्रकार हैं,इनमें से प्रमुख कुछ इस प्रकार हैं:-

1.आरा मक्खी
2.फली बीटल
3.पत्ती भक्षक लटें
4.हीरक तितली
5.गोभी की तितली
6.तम्बाकू की इल्ली

उपचार या रोकथाम:

इन सभी इल्लियों व कीटों को नियंत्रण करने के लिए नीम की निबौली का अर्क 4 प्रतिशत या बीटी -1 एक ग्राम प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिडकाव करना चाहिये। जो किसान भाई इन्सेक्टीसाइड से नियंत्रण करना चाहें

कृवो स्पिनोसैड 43 एससी
1 मिलीलीटरप्रति 4 लीटर पानी में या एमामेक्टिन बेंजोएट 5 एससी 1 ग्राम प्रति 2 लीटर पानी में या क्लोरऐन्ट, निलिमोल 18.5 एसासी एक मिली लीटर प्रति 10 लीटर पानी में या फेनवेलहेट 20 ईसी 1.5 मिलीलीटर प्रति 2 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

पत्ता गोभी के पत्तों को चूस कर पौधे को कमजोर बनाने वाला एक कीट मोयला भी है, जिसकी रोकथाम करने के लिए डाइमेथेएट 30 ईसी 2.0 मिलीटर प्रति लीटर पानी या इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एसएल 1 मिलीलीटर प्रति 3 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

आर्द्रगलन रोग: इस रोग को डम्पिंग आफ भी कहते हैं। यह रोग अगेती किस्मों की नर्सरी में लगना शुरू होता है। इससे पौधे मरने लगते हैं। इसकी रोक थाम के लिए थाइम या कैप्टान 3 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करना चाहिये। रोग के संकेत मिलने पर बोर्डो मिश्रण 2:2:50 या कॉपर आक्सीक्लोराइड को 3 ग्राम प्रतिलीटर पानी में मिलाकर स्प्रे करें।

काला सड़न भी बीजों की क्यारी में या नई पौध में लगता है। इससे फूलों व डंठलों में सड़न पैदा होती है। इसकी रोकथाम पत्ता गोभी की बीजों की बुवाई से पहले स्ट्रेप्टोसाक्लिन 250 ग्राम या बाविस्टिन एक ग्राम प्रतिलीटर पानी में घोल कर 2 घंटे तक भिगोकर रखें। उसे छाया में सुखाने के बाद ही बुआई करें। बाद में रोग के संकेत मिलने पर इन्हीं दोनों दवाओं का छिड़काव करें।

फसल की कटाई:

किसान भाइयों जब फसल तैयार हो जाये तब आपको फसल की कटाई यानी पत्ता गोभी की तुड़ाई बाजार भाव देख कर करें। अधिकांश किस्मों की फसलें 75 से 90 दिनों के भीतर तैयार हो जातीं हैं।

जबकि कुछ ऐसी किस्में भी हैं जिनकी फसल 55 दिन में ही कटाई के लिए तैयार हो जाती है। पत्ता गोभी के पूरा बड़ा होने पर ही उसकी कटाई करनी चाहिये। पत्ता गोभी अच्छी तरह कड़ा होने पर ही काटा जाना चाहिये। किसान भाइयों पत्ता गोभी की कटाई का समय ठंडा मौसम ही सबसे उपयुक्त होता है। इसको कटाई के बाद छाया या नमी वाली जगह में रखना चाहिये। जिससे काफी समय तक ताजा बना रहे। जब पत्ता गोभी कड़ा हो जाये और उसके पत्ते अलग अलग होने लगे तो तुरन्त काट लेना चाहिये। किसान भाइयों पत्ता गोभी की पैदावार प्रति हेक्टेयर कम से कम 50 टन तो होती ही है। अच्छी किस्म और उचित प्रबंधन वाली खेती से पत्ता गोभी को प्रति हेक्टेयर 70 से 80 टन की भी पैदावार प्राप्त की जा सकती है।

एक अक्टूबर से केवल आधार से लिंक्ड खातों में होगा धान के मूल्य का भुगतान

अगर आप भी किसान हैं और हर साल अपने धान को बेचकर पेमेंट अपने बैंक एकाउंट में लेते हैं, तो इस बार सावधान हो जाएं। क्योंकि इस साल आपकी पेमेंट बैंक एकाउंट में तभी हो पाएगी, जब आपका एकाउंट आधार से लिंक होगा। इस साल आपको सरकार द्वारा दी गई गाइडलाइन्स का पालन करना होगा तभी आप धान का पेमेंट अपने बैंक एकाउंट में ले सकेंगे।

तो आइए इसी के साथ हम आगे बढ़ते हैं और जानते हैं कि धान को बेचकर किसान अपना भुगतान कैसे पा सकते हैं।

क्या है नया तरीका?

अपर आयुक्त (विपणन) अरुण कुमार सिंह ने बताया कि धान की खरीद की शुरुआत 1अक्तूबर से 31 जनवरी 2022 तक पश्चिमी उत्तर प्रदेश तथा बुन्देलखण्ड में होगी। वहीं एक नवम्बर से 28 फरवरी 2022 तक पूर्वी उत्तर प्रदेश में इसकी खरीदारी की जाएगी। जिसके लिए किसानों को निम्नलिखित बातों का पालन करना होगा .....

1. यदि किसान धान बेचना चाहते हैं तो उसके लिए उनको कृषक ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन कराना अनिवार्य है। यह रजिस्ट्रेशन आधार नम्बर व आधार में अंकित मोबाइल नम्बर पर भेजे गए ओटीपी नंबर को डालने के बाद ही हो सकेगा।

2. इस साल किसानों को धान का पेमेंट उसी बैंक एकाउंट में किया जाएगा, जो आधार नम्बर से लिंक होगा। इसलिए किसान अपना पेमेंट जिस बैंक एकाउंट में चाहते हैं, उसे आधार से लिंक करा लें।

3. इसके अलावा अगर आपका बैंक एकाउंट से लिंक आधार का फोन नम्बर बंद है तो आपको उसे भी जल्द ही चालू कराना होगा। वरना आपको पेमेंट प्राप्त करने में परेशानी होगी।

कब से शुरू होगा ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन?

धान की खरीद के लिए जो ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन है, उसे 16 अगस्त 2021 से ही शुरू कर दिया गया है। इसे पहले से ही किसानों की सुविधा के शुरू कर दिया गया है।

किसानों द्वारा कराए गए रजिस्ट्रेशन (ई-क्रय प्रणाली (नच.हवअ.पद) में उन्हें एक टोकन मिलेगा। उस टोकन को क्रय केंद्रों पर ले जाना पड़ेगा, तभी किसानों से धान की खरीदारी की जाएगी। इस रजिस्ट्रेशन को किसान अपने घर या फिर सीएससी से भी करा सकते हैं।

किसानों की मदद के लिए कोई नंबर?

जी हां, किसानों को किसी भी तरह की कोई परेशानी न हो। इसलिए उनकी हेल्प के लिए एक टोल फ्री नम्बर भी उपलब्ध कराया गया है।

अगर किसानों को किसी भी तरह की कोई समस्या होती है तो वह मदद के लिए टोल फ्री नम्बर 1800-1800-150 पर संपर्क कर सकते हैं। इसके अलावा वो सम्बन्धित जिले के जिला खाद्य विपणन अधिकारी से, तहसील के क्षेत्रीय विपणन अधिकारी से या फिर किसान ब्लॉक के विपणन निरीक्षक से भी सहायता ले सकते हैं।

कहां कहां होगी धान की खरीदारी?

वर्ष 2021- 22 में धान की खरीदारी कहां कहां की जाएगी उसकी लिस्ट तैयार कर ली गई है। किसानों से धान की खरीदारी 1 अक्टूबर से 31 जनवरी 2022 तक होगी। इस तारीख में पश्चिमी उप्र व बुंदेलखंड के अलीगढ़, बरेली, आगरा, हरदोई, सीतापुर, मुरादाबाद, सहारनपुर, मेरठ, लखीमपुर और झांसी मंडलों में खरीदारी की जाएगी। इसके अलावा एक नवंबर से 28 फरवरी 2022 तक पूर्व उ.प्र. के कानपुर, चित्रकूट, मिर्जापुर, रायबरेली, अयोध्या, उन्नाव, गोरखपुर, प्रयागराज, वाराणसी, देवीपाटन, बस्ती सहित कई जिलों में धान की खरीदारी क्रय केंद्रों पर की जाएगी।

खरपतवार का नियंत्रण कैसे करें

धान के लिए सरकार द्वारा इस साल का समर्थन मूल्य निर्धारित कर दिया गया है। किसानों से इस बार जहां सामान्य धान को 1940 रुपए प्रति क्विंटल खरीदा जाएगा। वहीं ए ग्रेड धान का दाम 1960 रुपये प्रति क्विंटल होगा।

धान खरीद किसान योजना के फायदे

यह बात तो सभी जानते हैं कि सालभर मेहनत करने के बावजूद भी किसानों को अनाज के सही दाम के लिए दूर दूर तक मंडियों में भटकना पड़ता है। जिस कारण उनका समय तो बर्बाद होता ही है, साथ ही काफी खर्चा भी हो जाता है। वहीं अगर उन्हें मंडी में भी अनाज के सही मूल्य नहीं मिलते हैं तो उनको काफी घाटा उठाना पड़ता है।

किसानों की इन सारी परेशानियों को हल करने के लिए सरकार ने धान खरीद किसान योजना को लागू की है। जिसके लिए उन्हें ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन कराना आवश्यक है। इस योजना के तहत किसानों को निम्नलिखित लाभ होंगे –

1.किसानों को अपना धान सही दाम में बेचने के लिए इधर-उधर नहीं भटकना पड़ेगा।

2. किसान ऑनलाइन धान खरीद किसान रजिस्ट्रेशन करने के बाद, घर बैठे अपने ग्राहकों को ढूंढ सकते हैं। और सही दाम में उन्हें अपने धान बेच सकते हैं।

3. इस योजना का सबसे बड़ा फायदा यह है कि इससे किसानों को उनके धान के अच्छे पैसे मिल जाएंगे। साथ ही उनके कीमती समय की भी बचत होगी।

अब 290 रुपये प्रति क्विंटल मिलेगी गन्ने की कीमत

प्रधानमंत्री की अध्यक्षता वाली समिति ने चीनी सीजन 2021अक्टूबर कृ2022 सितंबर के लिए गन्ने के एफआरपी को स्वीकृति प्रदान कर दी है। अब गन्ने का मूल्य 290 रुपए प्रति कुंतल दिया जाएगा। स्वीकृति के मुताबिक यह प्रत्येक 0-1% की वसूली में 10% से अधिक की वृद्धि हेतु, और एफआरपी में रिकवरी हेतु प्रत्येक 0-1% की कमी के लिए 2.90 रुपए प्रति क्विंटल का एक प्रीमियम प्रदान करते हुए 10: की मूल वसूली दर के लिए 290/& रुपये प्रति क्विंटल होगी। हालांकि, सरकार ने किसानों के हितों की रक्षा के लिए यह भी निर्णय लिया है कि उन चीनी मिलों के मामले में कोई कटौती नहीं होगी जहां वसूली 9.5 फीसदी से कम है। ऐसे किसानों को गन्ने के लिए वर्तमान चीनी सीजन 2020-21 में 270.75 रुपये प्रति क्विंटल के स्थान पर आगामी चीनी सीजन 2021-22 में 275.50 रुपये प्रति क्विंटल मिलेंगे।

चीनी सीजन 2021-22 के लिए गन्ने की उत्पादन लागत 155 रुपए प्रति क्विंटल है। 10% की वसूली दर पर 290 रुपए प्रति क्विंटल की यह एफआरपी उत्पादन लागत से 87-1% अधिक है, यह किसानों को उनकी लागत पर 50% से अधिक का रिटर्न देने के वादे को भी सुनिश्चित करती है।

वर्तमान चीनी सीजन 2020-21 में 91,000 करोड़ रुपये मूल्य के करीब 2,976 लाख टन गन्ने की चीनी मिलों द्वारा खरीद की गई, जो अब तक का उच्चतम स्तर है और न्यूनतम समर्थन मूल्य के मामले में धान की फसल की खरीद के बाद दूसरे स्थान पर है। आगामी चीनी सीजन 2021-22 में गन्ने के उत्पादन में अपेक्षित वृद्धि को ध्यान में रखते हुए चीनी मिलों द्वारा लगभग 3,088 लाख टन गन्ना खरीदे जाने की संभावना है। गन्ना किसानों को किए जाने वाला कुल प्रेषण लगभग 1,00,000 करोड़ रुपये होगा। सरकार अपने किसान हितैषी उपायों के माध्यम से यह सुनिश्चित करेगी कि गन्ना किसानों को उनकी बकाया धनराशि समय पर मिले।

स्वीकृत एफआरपी चीनी मिलों द्वारा चीनी सीजन 2021-22 (1 अक्टूबर, 2021 से प्रारंभ) में किसानों से गन्ने की खरीद के लिए लागू होगी। चीनी क्षेत्र एक महत्वपूर्ण कृषि-आधारित क्षेत्र है जो कृषि श्रम और परिवहन सहित

विभिन्न सहायक गतिविधियों में कार्यरत लोगों के अलावा लगभग 5 करोड़ गन्ना किसानों और उनके आश्रितों एवं चीनी मिलों में सीधे कार्यरत लगभग 5 लाख श्रमिकों की आजीविका से जुड़ा है।

पृष्ठभूमि:

एफआरपी का निर्धारण कृषि लागत और मूल्य आयोग (सीएसीपी) की सिफारिशों के आधार पर और राज्य सरकारों एवं अन्य हितधारकों के परामर्श के बाद किया गया है।

पिछले 3 चीनी सीजनों 2017-18, 2018-19 और 2019-20 में, लगभग 6.2 लाख मीट्रिक टन (एलएमटी), 38 एलएमटी और 59.60 एलएमटी चीनी का निर्यात किया गया है। वर्तमान चीनी सीजन 2020-21 (अक्टूबर-सितंबर) में, 60 एलएमटी के निर्यात लक्ष्य के मुकाबले, लगभग 70 एलएमटी के अनुबंधों पर हस्ताक्षर किए गए हैं और 23 अगस्त 2021 तक 55 एलएमटी से अधिक का वास्तविक रूप से देश से निर्यात किया गया है। चीनी के निर्यात से चीनी मिलों की तरलता में सुधार हुआ है जिससे वे किसानों का बकाया गन्ना मूल्य चुकाने में सक्षम हुई हैं।

इथेनाल व पेट्रोल बनेगा:

सरकार चीनी मिलों को अतिरिक्त गन्ने को पेट्रोल के साथ मिश्रित इथेनॉल में बदलने के लिए प्रोत्साहित कर रही है, जो न केवल हरित ईंधन के रूप में कार्य करता है बल्कि कच्चे तेल के आयात के संदर्भ में विदेशी मुद्रा की बचत भी करता है। पिछले 2 चीनी सीजन 2018-19 और 2019-20 में, लगभग 3.37 एलएमटी और 9.26 एलएमटी चीनी को इथेनॉल में परिवर्तित किया गया है। वर्तमान चीनी सीजन 2020-21 में 20 लाख मीट्रिक टन से अधिक को परिवर्तित किए जाने की संभावना है। आगामी चीनी सीजन 2021-22 में, लगभग 35 एलएमटी चीनी को इथेनॉल में बदले जाने का अनुमान है और 2024-25 तक लगभग 60 एलएमटी चीनी को इथेनॉल में बदलने का लक्ष्य है,

जो अतिरिक्त गन्ने की समस्या के साथ-साथ विलंबित भुगतान का भी समाधान करेगा और इससे गन्ना किसानों को समय पर उनका भुगतान भी मिलेगा।

पिछले तीन चीनी सीजनों में तेल विपण न कंपनियों (ओएमसी) को इथेन□ल की बिक्री से चीनी मिलोंद्वडिस्टिलरीज द्वारा 22,000 करोड़ रुपये के राज. स्व का सृजन किया गया है। वर्तमान चीनी सीजन 2020-21 में चीनी मिलों को ओएमसी को इथेनॉल की बिक्री से लगभग 15,000 करोड़ रुपये का रा. जस्व प्राप्त हो रहा है।

पिछले चीनी सीजन 2019-20 में लग. भग 75,845 करोड़ रुपये का गन्ना बकाया देय था, जिसमें से 75,703 करोड़ रुपए का भुगतान कर दिया गया है और अब केवल 142 करोड़ रुपया बकाया हैं। हालांकि, वर्तमान चीनी सीजन 2020-21 में 90,959 करोड़ रुपए के गन्ना बकाया में से 23 अगस्त 2021 तक किसानों को 86,238 करोड़ रुपये की गन्ना बक. या धनराशि का भुगतान किया जा चुका है। गन्ने के निर्यात में वृद्धि और गन्ने से इथेनॉल बनाने की प्रक्रिया से किसानों के गन्ना मूल्य भुगतान में तेजी आई है।

जानिए किन राज्यों में मिल रही कृषि यंत्रों की खरीद पर छूट

फसल अवशेष प्रबंधन के लिए धान उत्पादक सभी राज्यों में व गैर धान उत्पादक राज्यों में कृषि यंत्रों पर छूट प्रदान की जा रही है। तकरीबन हर राज्य में इस तरह की छूट की तिथि खत्म होने की ओर है या फिर होने वाली है। हरियाणा के कृषि तथा किसान कल्याण विभाग द्वारा फसल अवशेष प्रबंधन हेतु कृषि यंत्रों की खरीद के लिए 7 सितंबर 2021 तक आवेदन आमंत्रित किए गए हैं। एक सरकारी प्रवक्ता ने इस बारे में जानकारी देते हुए बताया कि व्यक्तिगत श्रेणी में जहां किसानों को 50 प्रतिशत अनुदान दिया जाएगा वहीं किसानों की सहकारी समिति, एफपीओ, पंजीकृत किसान समिति तथा पंचायत द्वारा कस्टम हायरिंग सैंटर स्थापित करने पर 80 प्रतिशत अनुदान दिया जाएगा।

उन्होंने बताया कि लाभार्थियों का चयन संबंधित उपायुक्त की अध्यक्षता में गठित जिला स्तरीय कार्यकारिणी समिति द्वारा किया जाएगा तथा चयन उपरांत किसान सूचीबद्ध कृषि यंत्र निर्माताओं से मोल-भाव कर अपने यंत्र खरीद सकते हैं।

प्रवक्ता ने आगे बताया कि विभाग की उक्त योजना से संबंधित अधिक जानकारी के लिए किसान संबंधित उपकृषि निदेशकद्सहायक कृषि अभियंता के कार्यालय से संपर्क कर सकते हैं।

इसके अलावा, टोल फ्री नंबर : **1800&180&2117** एवं विभागीय वेबसाइट **www.agriharyana.gov.in** भी जानकारी ले सकते हैं।

जानिए किसानों पर टैक्स लगने के क्या हैं नियम? एग्रीकल्चर इनकम कब हो जाती है टैक्सेबल?

जैसा कि हम सभी जानते हैं भारत एक कृषि प्रधान देश है। हमारे देश में ज्यादा. तर लोग अपना जीवन यापन करने के लिए कृषि पर निर्भर हैं। वहीं देश के बाकि लोग किसानों पर निर्भर हैं, ताकि उन्हें खाने पीने की कोई कमी न हो। यही कारण है कि किसानों पर किसी भी तरह का कोई टैक्स नहीं लगाया जाता। बल्कि उन्हें सरकार की तरफ से कई योजनाओं के तहत राहत दी जाती है, जि. ससे कि उन्हें किसी भी तरह की कोई परेशानी न हो।

यह पोस्ट खासतौर से उन लोगों के लिए है, जो जानना चाहते हैं कि किसानों पर टैक्स लगने के क्या हैं नियम और कब एग्रीकल्चर इनकम पर भी टैक्स लगने लगते हैं। तो आइए आगे बढ़ते हैं और जानते हैं इसकी पूरी जानकारी।

एग्रीकल्चर इनकम क्या है?: खेती करके जो कमाई की जाती है उसे ही एग्रीकल्चर इनकम कहते हैं। और उस एग्रीकल्चर इनकम में निम्नलिखित चीजें शामिल हैं ढ्

1.खेती की जमीन को रेंट या लीज पर देकर उससे हुई कमाई को कृषि आय या एग्रीकल्चर इनकम कहते हैं।
2.खेती की जमीन पर खेती करके जो फसल उगाई जाती है, उसे वैसे ही बाजार में बेचकर की गई कमाई एग्रीकल्चर इनकम कहलाती है।
3.अगर खेती वाली जमीन पर कोई किसान घर बनाकर रहता है और उस जमीन को स्टोर रूम या आउट हाउस की तरह यूज करता है तो उस जमीन से हुई इनकम भी एग्रीकल्चर इनकम के अंतर्गत ही आती है।

किसानों पर टैक्स लगने के नियम: किसानों पर किसी भी तरह का कोई टैक्स नहीं लगता, चाहे उस किसान की कमाई लाखों में ही क्यों न हो। लेकिन कुछ स्थिति में किसानों को भी टैक्स चुकाना पड़ता है, क्योंकि वह स्थिती एग्री. कल्चर इनकम के अंदर नहीं आती।

जैसे अगर किसी कृषि उत्पाद से प्रोसेस्ड फूड तैयार होते हैं तो उस प्रोसेस्ड फूड से हुई कमाई एग्रीकल्चर इनकम नहीं होती और उसके लिए टैक्स देना पड़ता है। अब आप सोच रहे होंगे कि प्रोसेस्ड फूड क्या है? तो मैं आपको बता दूं कि प्रोसेस्ड फूड निम्नलिखित होते हैं –

1.जैसे अगर गन्ने की खेती की जाती है तो वह गन्ना अगर बाजार में गन्ने के रूप में बेचा जाता है तो उसे Agriculture Income कहते हैं। लेकिन अगर उसी गन्ने का गुड़ बनाकर उसे बेचा जाता है तो वह गुड़ प्रोसेस्ड फूड होता है। और उसके लिए किसानों को टैक्स देना पड़ता है।
2.उसी तरह अगर कोई रबर की खेती करता है और उसको सीधे बेचता है तो उसपर टैक्स नहीं लगता। लेकिन यदि उसी रबर का टायर बनाकर बेचता है तो वह प्रोसेस्ड फूड कहलाता है, जिसके लिए टैक्स देना पड़ेगा।
3.वहीं अगर कोई व्यक्ति कॉफी की खेती करता है और उस कॉफी को बाजार में बेचता है तो उसपर ज्स्त्र नहीं देना होगा। लेकिन उसी कॉफी की पैकेजिंग करने पर वह टैक्सेबल हो जाएगा।

इसके अलावा पेड़ों की कमर्शियल बिक्री भी एग्रिकल्चर इनकम के अंतर्गत नहीं आती है। और इसके लिए भी टैक्स देना पड़ता है।

किस कानून के तहत किसानों पर नहीं लगता टैक्स?:

सरकार जिस एक्ट के अंतर्गत किसानों से कोई भी टैक्स नहीं लेती, वह इनकम टैक्स एक्ट 1961 का सेक्शन 10(1) है। इस कानून के तहत किसान अपनी खेती से जो भी कमाई करता है, उस प्दबवउम का उसे कोई भी हिस्सा टैक्स के रूप में नहीं देना पड़ता।

इसके अतिरिक्त अगर किसानों पर किसी भी प्रकार की कोई परेशानी आती है, जैसे ढ्र कम या अधिक बा. रिश, बहुत अधिक गर्मी या बाढ़ आदि, जिससे अगर फसल खराब हो जाती है तो सरकार कई योजनाओं के तहत किसानों की मदद करती है।

एग्रीकल्चर इनकम के लाभ

किसानों को उनके द्वारा की गई कृषि से जो आय प्राप्त होती है, उस एग्रीकल्चर इनकम से उन्हें निम्नलिखित फायदे होते हैं –

किसानों को कृषि से प्राप्त आय का कोई भी हिस्सा सरकार को नहीं देना पड़ता। इसलिए उन्हें अपनी कमाई (Agriculture Income) का पूरा प्रॉफिट मिलता है।

किसी भी तरह की कोई समस्या उत्पन्न होने पर सरकारी लाभ प्राप्त होते हैं। क्योंकि पूरा देश अपना पेट भरने के लिए किसानों पर ही निर्भर रहता है, इसलिए सरकार द्वारा चलाई गई कई ऐसी योजनाएं हैं जो उन्हें फायदा पहुंचाती हैं।

किसानों को कृषि द्वारा अपनी कमाई करने के लिए अब इधर-उधर भटकना नहीं पड़ता, और न ही अपनी फसलों को कम दाम में बेचना पड़ता है। कई योजनाओं के अंतर्गत सरकार द्वारा ही उनकी फसलों को अच्छे दामों में खरीद लिया जाता है। इससे किसान घाटे से बच जाते हैं और उनकी एक अच्छी Agriculture Income हो जाती है।

जानिए अश्वगंधा की खेती कब और कैसे करें

अश्वगंधा की खेती औषधीय उपयोग के लिए की जाने लगी है। गांवों में इसके पत्तों को घाव एवं फोड़े को पकाने के लिए प्रयोग में लिया जाता है लेकिन इसकी जड़ से बनने वाले चूर्ण को कई रोगों में काम में लिया जाता है। यह बलवर्धक, कामोत्तेजक एवं स्फूर्तिदायक होता है। इसका उपयोग महिलाओं के गर्भाशय को मजबूत करने के अलावा यौनजनित रोगों में काम करता है। इसके पौधे दो चार फीट तक बढ़ जाते हैं। इसका जड़ पत्ता, फल और बीज सभी काम में आते हैं।अब इसकी व्यावसायिक खेती होने लगी है। पूर्व में यह क्षेत्र विशेष यानी राजस्थान के नागौर आदि में यूंही हो जाया करती है। इसकी खेती बलुई दोमट मिट्टी में अच्छी होती है।अच्छी जल निकासी वाली जमीन इसकी खेती के लिए बेहतर रहती है।

कैसे करें अश्वगंधा की खेती

अश्वगंधा की पौध जून-जुलाई में तैयार करके रोपी जाती है। बीज छिटककर भी इसकी खेती की जा सकती है लेकिन इसमें घने पौधों को हटाने का काम बढ़ जाता है। बीज बरसात आने से पहले या बरसात होने के बाद एक से तीन सेंटीमीटर गहरे कूढ़ों में बोए जाते हैं।

इसके बाद इन्हें पौधे से पौधे और लाइन से लाइन की दूरी 60सेंटीमीटर रखते हुए रोप दिया जाता है। एक है. क्टेयर खेत के लिए अधिकतम 700 ग्राम बीज पर्याप्त रहता है।

अश्वगंधा के सामयिक कार्य:

बीज के बोए गए बीजों को अंकुरण के 25 दिन बाद छांटने का काम किया जाता है। अश्वंगधा का पौधा दो से तीन फीट तक जगह घेर लेता है। इस हिसाब से किस्मों का चयन करना चाहिए ताकि हमें अच्छी तादात में जड़ें मिलनी चाहिए। रोपण के बाद पानी की जरूरत होती है लेकिन आम तौर पर इसकी खेती को हल्की बरसात की जरूरत होती है।

उत्पादन:

अश्वगंधा की फसल में दिसंबर के आसापास फल-फूल लगना शुरू होता है और करीब 150 से 180 दिन में फसल तैयार हो जाती है। परिपक्व फसल को उखाडा जाता है। तने को जड़ के प्रारंभ स्थल से दो से तीन सेंटीमीटर ऊपर से काटकर जड़ के टुकड़ों में काटकर धूप में सुखाया जाता है। एक हैक्टेयर जमीन से 650 से 800 किलोग्राम जड़ें प्राप्त होती हैं। सूखने के बाद इनका बजन 350 से 400 किलोग्राम रह जाता है।

ईसबगोल की खेती में लगाइये हजारों और पाइए लाखों

किसान भाइयों, आज के जमाने में कम लागत में अधिक कमाई कौन नहीं करना चाहता है, फिर किसान भाई ही इसमें पीछे क्यों रहें? ऐसा नहीं कि किसानों के लिये संभव नहीं है, संभव है लेकिन जरा सा उस ओर ध्यान देने की जरूरत है। बाकी आप खेती तो करते हो चाहे गेहूं की खेती करो चाहे जीरा की खेती करो। खेती तो खेती है लेकिन दोनों के बाजार भाव में जमीन आसमान का अंतर होता है। कहने का मतलब यह है कि जिन किसान भाइयों को कम समय में अधिक कमाई करनी है, उन्हें परम्परागत खेती से हट कर खेती करनी होगी। ऐसे किसान भा. इयों को सगंधीय व औषधीय फसलों की खेती करनी होगी, उन्हें अपनी मनचाही मंजिल मिल जायेगी। आज हम यहां पर ऐसी ही खेती के बारे में बताने जा रहे हैं, जिसमें आपको हजारों रुपये की लागत लगानी है और जब फसल तैयार होगी तो आपको लाखों की कमाई होगी। साथ में समय भी बहुत कम लगेगा।

आइये जानते हैं कि ईसबगोल का क्या महत्व है ?

ईसबगोल एक अत्यंत महत्वपूर्ण औषधीय फसल है। औषधीय फसलों के निर्यात में ईसबगोल का पहला स्थान है। मौजूदा समय में भारत से प्रतिवर्ष 120 करोड़ रुपये के मूल्य का ईसबगोल विदेशों को निर्यात हो रहा है।भारत में ईसबगोल का उत्पादन उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, गुजरात, पंजाब, राजस्थान, हरियाणा आदि में होता है। ईसबगोल के बीज पर पाए जाने वाला छिलका ही इसका औषधीय उत्पाद है, जिसे ईसबगोल की भूसी के नाम से पह. चाना जाता है। ईसबगोल के बीज में एक चौथाई भूसी होती है। ईसबगोल की भूसी का उपयोग पेट की सफाई, कब्जियत, दस्त, आंव,पेचिस,अल्सर, बवासीर जैसी बीमारियों के उपचार में दवा के रूप में किया जाता है। इसके अलावा इसका उपयोग आइस्क्रीम, रंग-रोगन व प्रिंटिंग उद्योग में भी किया जाता है।

किस प्रकार की जाती है ईसबगोल की खेती?: ईसबगोल की खेती के लिए किस प्रकार की जलवायु, मिट्टी, बीज, खाद, सिंचाई प्रबंधन आदि चाहिये उसके बारे में जानते हैं।

भूमि एवं जलवायु: ईसबगोल की खेती के लिए दोमट और बलुई मिट्टी सबसे उपयुक्त मानी जाती है। इसके अलावा जलनिकासी का विशेष प्रबंध होना चाहिये, जलभराव में यह फसल बहुत जल्द खराब हो जाती है। इसकी फसल के लिए मिट्टी का पीएच मान 7-8 होना चाहिये। यह फसल थोड़ी सी क्षारीय व रेतीली मिट्टी में उगाई जा सकती है।

ईसबगोल की खेती के लिए उष्णक. टिबंधीय जलवायु सबसे उपयुक्त मानी जाती है। इसकी खेती रबी की फसलों के साथ की जाती है। इसकी फसल के लिए 25 डिग्री सेल्सियश के आ. सपास तापमान की आवश्यकता होती है। इसकी फसल को शुरुआत में पानी की जरूरत होती है लेकिन फसल के पकने के समय पानी से नुकसान हो जाता है। उस समय अधिक गर्मी की आवश्यकता होती है।।

उन्नत किस्में: ईसबगोल की अनेक उन्नत किस्में हैं। इनका चयन क्षेत्र की भूमि, फसल के पकने की अवधि और पैदावार के आधार पर किया जाता है।

जवाहर ईसबगोल-4: इस तरह के बीज से रोपाई के लगभग 110-120 दिन बाद फसल पककर तैयार हो जाती है। इसका उत्पादन प्रति हेक्टेयर 15 क्विंटल तक होता है।

आर.आई. 89: इसका पौधा छोटे आकार का होता है। इसकी भी फसल 120 दिनों में तैयार हो जाती है और उत्पादन 12 से 15 क्विंटल तक होता है।

गुजरात ईसबगोल-2: इस बीज से गुजरात में सबसे अधिक खेती की जाती है। इस बीज से प्रति हेक्टेयर 10 क्विंटल के आसपास उत्पादन होता है।

आई.आई.1: अधिक उत्पादन के लिए यह बीज तैयार किया गया है। इस बीज से उत्पादन 16 क्विंटल से 18 क्विंटल तक प्रति हेक्टेयर होता है।

हरियाणा ईसबगोल-5:

इसकी फसल भी 120 दिन में ही तैयार हो जाती है और इससे उत्पादन 10 से 12 क्विंटल प्रति हेक्टेयर होता है।

इसके अलावा अन्य किस्मों में गुजरात ईसबगोल-1, हरियाणा ईसबगोल-2, निहारिका, ट्राबे सेलेक्कृशन 1 से 10 तक आदि का चयन करके बुआई की जा सकती है।

खेत की तैयारी कैसे करें: ईसबगोल की खेती के लिए खेत से पुरानी फसल के अवशेषों को समाप्त करके मिट्टी पलटने वाले हल से गहरी जुताई करनी चाहिये। उसके बाद खेत में गोबर की खाद डालकर उसे मिट्टी में कल्टीवेटर से मिला दें। इसके बाद पानीदेकर उसे छोड़ दें। जब मिट्टी की ऊपरी सतह सूखने लगे तब खेत की रोटावेटर से गहरी जुताई करें। फिर पाटा चलाकर खेत को समतल बना लें ताकि खेत में जलनिकासी की अच्छी व्यवस्था हो सके। जो किसान भाई ईसबगोल की खेती मेड़ों पर करना चाहते हों उन्हें जुताई के बाद खेतों में निश्चित दूरी की मेड़ बना लेनी चाहिये।

बुआई का समय और बुआई के तरीके: ईसबगोल की खेती में समय पर बुआई का बहुत महत्व है। इसकी पछैती खेती में अनेक तरह के रोग लगने की संभावनाएं रहतीं हैं। इसलिये किसान भाइयों को चाहिये कि इसका निर्धारित समय अक्टूबर के अंतिम सप्ताह से नवंबर के मध्य तक अवश्य बुआई कर लेनी चाहिये। बुआई से पहले बीजों को मेटालेक्जिकल से उपचारित कर लेनाचाहिये। एक हेक्टेयर में लगभग 5 किलो बीज की आवश्यकता पड़ती है। समतल भूमि में ईसबगोल के बीजों की बुआई छिड़काव विधि से की जाती है और मेड़ पर बीजों की बुआई ड्रिल प्रणाली से की जाती है, इसमें किसान भाइयों को चाहिये कि मेड़ों के बीच की दूरी एक फिट के रखें तथा बीजों की दूरी दो इंच के बराबर रखें तो अच्छा उत्पादन मिलेगा। छिड़काव विधि से बुआई करने के लिए पहले समतल भूमि में बीजों का छिड़काव कर दें उसके बाद कल्टीवेटर के पीछे पाटा बांधकर खेत की दो बार हल्की जुताई कर दें। इससे बीज मिट्टी में अच्छी तरह से मिल जाते हैं।

सिंचाई प्रबंधन

ईसबगोल की फसल को अधिक सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती है। बुआई के तुरंत बाद हल्की सिंचाई करना लाभप्रद रहता है। यदि बीजों का अंकुरण कम दिखाई दे तो 4-5 दिन बाद हल्की सिंचाई कर देनी चाहिये। अंकुरण के बाद पौधों को मात्र दो-तीन सिंचाई की जरूरत होती है, जिसमें पहली सिंचाई 30 से 35 दिन के बाद और दूसरी सिंचाई 50 से 60 दिन बाद करनी चाहिये। फव्वारा विधि से सिंचाई करने से अधिक लाभ होता है।

खाद प्रबंधन

ईसबगोल की खेती के लिए जुताई के वक्त प्रतिहेक्टेयर 10 गाड़ी गोबर की खाद खेत में देनी चाहिये। इसके साथ एक बोरा एनपीके प्रति हेक्टेयर के हिसाब से देना अच्छा रहेगा। साथ ही 25 किलो प्रति हेक्टेयर सिंचाई के समय डालने से पैदावार और अच्छी होती है।

खरपतवार प्रबंधन

ईसबगोल की खेती में दो बार निराई-गुड़ाई करने की आवश्यकता होती है। पहली बार बुआई के एक माह बाद और दूसरी बार लगभग दो माह बाद निराई गुड़ाई की जानी चाहिये। इसके अलावा खरपतवार नियंत्रण के लिए बुआई के बाद सल्फोसल्फ्यूरॉन या आइसोप्रोटच्रून का छिड़काव करना चाहिये।

ईशबगोल के पौधों में लगने वाले रोग और उपचार:

हालांकि ईसबगोल के पौधों में रोग बहुत कम लगते हैं, फिर भी कुछ ऐसे भी रोग हैं जिनके लगने से पौधा जल्दी नष्ट हो जाता है। इससे फसल बर्बाद हो जाती है। प्रमुख रोग इस प्रकार हैं:-

मोयला:

ईसबगोल के पौधे में लगने वाला यह रोग कीटों से लगता है। इस रोग का प्रभाव बुआई के दो माह बाद जब पौधों में फूल आना शुरू होते हैं तभी दिखाई देने लगता है। इस रोग में कीट पौधों का रस चूसने लगते है और पौधा जल्द ही सूख जाता है। किसान भाइयों जैसे ही इस रोग के संकेत मिलें तो तत्काल ही पौधों पर इमिडाक्लोपिड या ऑक्सी मिथाइल डेमेटान की उचित मात्रा का छिड़काव करना चाहिये। फसल बच जायेगी।

मृदुरोमिल आसिता :

यह रोग ईसबगोल के पौधे पर बाली निकलने के समय दिखाई देता है। रोग लगते ही पौधे की बढ़वार रुक जाती है और पत्तियों पर सफेद रंग का चूर्ण दिखाई देने लगता है। रोग का पता लगते ही पौधों पर क□पर आक्सीक्लोराइड या मैंकोजेब का छिड़काव करना लाभदायक साबित होगा।

फसल की कटाई :

ईसबगोल के पौधों की पत्तियां जब पली पड़कर सूखने लगती हैं, तब समझ लेना चाहिये कि अब फसल पक कर तैयार हो गयी है और उसकी कटाई कर लेनी चाहिये। किसान भाइयों कटाई के समय यह ध्यान रखना जरूरी है कि फसल की कटाई सुबह के समय ही करनी चाहिये जिससे बालियों से बीज कम झड़ते हैं। छोटे किसान जो छोटे रकबे में खेती करने वाले छोटे किसान भाई तो इसकी बालियों को सुखाकर हाथ से मसल कर दानों को निकाल लेते हैं

अक्टूबर माह के कृषि कार्य

खेती में हर माह कुछ न कुछ कार्य होते रहते हैं। अपनी पत्रिका के माध्यम से हम किसान भाईयों को विशेषकर नए किसानों को जरूरी जानकारी प्रदान करने का प्रयास करते हैं।

धान के कार्य

धान की फसल इस समय देश के हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश व दक्षिण भारत के कई राज्यों की मुख्य फसल के रूप में की जाती है। इस समय देरी के बोए गए धान में गंधी कीट का प्रकोप होने लगता है। गंधी कीट से प्रभावित खेतों में सुबह के समय जाने पर खेतों में बदबू आती है। यह कीट दूध की अवस्था में दाने का रस चूस लेता है। बचाव के लिए किसी भी सामान्य कीटनाशक का छिड़काव करें। नीम के तेल से भी इसे रोका जा सकता है। बालियां पीली पड़ने लगें तो फसल को हांसिया या कंबाइन हार्वेस्टर से कटवाकर सुखाना चाहिए। धान में 12 प्रतिशत से ज्यादा नमी रहने पर फसल खराब हो सकती है।

तोरिया, सरसों, राया व तारामीरा

तोरिया की बिजाई का समय सितंबर के पहले हफ्ते तक रहता है लेकिन चूंकि इस बार पछेती बरसातों का असर है लोगों ने इसे पछेती भी बोया है। सरसों व राया की बिजाई सितंबर के अंत से 10 अक्टूबर के मध्य कर सकते हैं। इसके लिए दिन का तापमान 25 डिग्री सेल्सियस रहना चाहिए। बुवाई के समय कट्टा आदि कीटों से बचाव हेतु कार्बोफ्यूरान दवा अंतिम जुताई की बुवाई में खाद के साथ डाल देनी चाहिए। जल्दी बोई गई तोरिया में यूरिया का बुरकाव पानी लगाने के बाद करें। सरसों की आरा मक्खी व लाल बालों वाली सुण्डी अक्टूबर में सक्रिय हो जाती हैं। रोकथाम के लिए इण्डोसल्फान जैसे किसी गैर प्रतिबंधित कीटनाशक का छिडकाव करें। चितकबरा कीट की रोकथाम हेतु मैलाथियान 70 ईसी दवा को 200 लीटर पानी में घोलकर छिड़कें।

कपास के कार्य

इस माह तक देशी कपास में गोलों से कपास निकलने लगती है। अमेरिकन कपास में भी गोलों से कपास निकलना शुरू हो जाती है। इस बार पछेती बरसात के चलते कपास के गोलों से कपास को साथ के साथ निकालते रहें अन्यथा वह बरसात के चलते बदरंग हो सकती है। सामान्यतया देशी कपास को 8 से 10 दिन के अंतराल पर व अमेरिकन कपास को 15 से 20 दिन के अंतराल में चुनते रहना चाहिए। किसी तरह की सूंडी का प्रभाव दिखे तो प्रभावी और नई कीटनाशक दवाओं का प्रयोग करें।

अरहर में सामयिक कार्य

बरसात पछेती होने से अरहर की फसल में भी कीट एवं रोगों का प्रकोप होना तय है। इस समय कीट नियंत्रण के लिए गैर प्रतिबंधित प्रभावी कीटनाशक, इंडोसल्फान, क्लोरोपायरीफास, मैलाथियान आदि में से किसी एक का प्रयोग करें। विशेष. कर फली भेदक कीट को मारने के लिए दवा का प्रयोग जरूर करें।

गन्ने की फसल के सामयिक कार्य

अक्टूबर माह में गन्ने की शरद कालीन फसल लगाई जा सकती है। इस समय में लगाई जाने वाली फसल में कल्लों का विकास ठंड के कारण ज्यादा तेजी से नहीं होता लेकिन बोते समय लाइन से लाइन की दूरी दो फीट रखें। यदि मध्य में आलू की फसल लेनी हो तो दूरी तीन फीट रखनी चाहिए। इस माह में पायरिल्ला कीट गन्ने का रस चूसता है। इसकी रोकथाम के लिए प्रभावी कीटनाशक का प्रयोग करें। इनमें मोनोक्रोटोफास, क्लोरोपायरीफास में से किसी एक दवा का उपयोग करें। हर दवा के पैकेट पर प्रयोग विधि व मात्रा अंकित रहती है। फसल में कीट प्रभाव दिखे तो निचले पत्ते उतारकर मैलाथियान दवा का छिड़काव करें।

गेहूं

अगेती धान वाले एवं बारानी क्षेत्रों में अक्टूबर के अंतिम सप्ताह में गेहूं की बिजाई किसान करने लगते हैं। 2967, 2733 आदि लम्बी अवधि वाली किस्में इस समय बोना उचित रहता है। 2967 किस्म अगेती एवं पछेती दोनों स्थितियों में अच्छा उत्पादन देती है ऐसा किसानों का अनुभव है।

मूंगफली में सामयिक कार्य:

मूंगफली की खेती कई नए इलाकों में भी किसान करने लगे हैं। मानसून के बाद में चेंपा कीट सरसों की तरह मूंगफली की फसल को प्रभावित करता है। इससे बचाव के लिए मैलाथियान जैसे सामान्य कीटनाशक का छिडकाव करें। चेंपा पानी की तेज धार व किसी हल्के कीटनाशक से भी मर जाता है। रोकथाम के लिए नीम आयल का भी प्रयोग कर सकते है। अक्टूबर के अंतिम सप्ताह व नवंबर के पहले हफ्ते में आखिरी सिंचाई कर दें ताकि आगामी फसल की बिजाई के लिए नमी संरक्षित करे।

मक्का के सामयिक कार्य :

अक्टूबर माह में शरद कालीन मक्का लगाई जाती है। इसकी बिजाई 15 अक्टूबर से 15 नवंबर तक की जा सकती है। यह अप्रैल-मई तक पक जाती है। इस समय की फसलों में रोग संक्रमण भी कम लगता है। संकर मक्का की गंगा 11, डक्कन 103, 105, त्रिशूलता, शक्तिमान 1, केएच 5981,91 आदि, संकुल मक्का की धवल, शरदमणी, शकित, लावा हेतु अम्बर, वीएल अम्बर एवं पर्ल किस्में, स्वीटकार्न की माधुरी, प्रिया, बेबीकार्न की एचएम 4, बीएल 42 आदि किस्में प्रमुख हैं।

अलसी के सामयिक कार्ये:

अलसी की खेती करना किसानों ने कम कर दिया है लेकिन अब शुगर के मरीज आदि लोग अलसी को आहार में लेने लगे हैं। इसकी कीमतें भी अच्छी मिलती हैं। इसकी खेती के लिए चिकनी व दोमट मिट्टी अच्छी रहती है। जल निकासी वाली जमीन ज्यादा अच्छी रहती है। इसके अक्टूबर के प्रारंभ से मध्य तक लगाया जा सकता है। अलसी की केकु2, एलसी 2023, 74 किस्में लगाएं। हर राज्य में क्षेत्रीय पर्यावरण अनुकूल किस्में मौजूद हैं।

चने की बिजाई की करें तैयारी:

चना अच्छी जल निकास वाली दोमट रेतीली तथा हल्की मिड़ियों में अच्छा होता है।गाढ़ वाली उच्च जल स्तर वाली जमीन में चना न लगाएं। नए इलाकों में चना लगाना जोखिम भरा रहता है। चने में दाना बनते समय तोता आदि पक्षी कम क्षेत्रफल में फसल होने पर नुकसान पहुंचाते हैं।

बारानी इलाकों में देशी चना 10 से 15 अक्टूबर के मध्य लगा देना चाहिए। सिंचित क्षेत्रों में देशी व काबुली चना 20 अक्टूबर से 10 नवंबर के मध्य लगाना चाहिए। बुबाई के समय तापमान सरसों की बिजाई के अनुकूल यानी 25 डिग्री सेल्सियस के करीब होना चाहिए। चने की उन्नत किस्मों व अन्य क्रियाओं की जानकारी के लिए हमारी बेबसाइट मेरीखेती डाट काम पर सर्च करें।

मटर की लाभकारी खेती :

मटर की खेती अक्टूबर अंत से मध्य नवंबर तक लगा सकते हैं। इसे गन्ना, सरसों आदि के साथ सहफसली खेती में भी लगाया जा सकता है। इसकी रचना, इंद्र, शिखा, मालवीय मटर 15,पूसा प्रभात,पंत मटर 5, प्रभात, पीजी 3, अपर्णा, उत्तरा आदि अनेक किस्में हैं।

बेहद कम पानी वाले इलाकों में लगाएं मसूर दाले:

मसूर की दाल बेहद अलग तरह के स्वाद के लिए जानी पहचानी जाती है। इसकी खेती के लिए अक्टूबर अंत से नवंबर के पहले हफ्ते का समय उचित रहता है। आईपीएल 81, नरेन्द्र मसूर 1, पंत मसूर 5, पूसा वैभव, के 75, सपना, गरिमा, एल 699 सहित अनेक रोग रोधी एवं राज्यों की मृदा व जलवायु के अनुकूल हैं।

फूल की खेती के कार्य : सब्जी वाली फसलों के साथ फूल के पौधे लगाने पर कीट प्रभाव कम होता है। कीट फलों की तरफ आकर्षित होते हैं। इससे मुख्य फसल की तरफ से उनका आकर्षण कम हो जाता है। इस समय गेंदा आदि की नर्सरी डाली जा सकती है। अक्टूबर माह के अंत से नवंबर माह तक गुलाब आदि की कटिंग से पौध तैयार की जा सकती है। डहलिया की पौध डाल सकते हैं व गुलदाउजी की पौध भी डाल सकते हैं।

फल: पपीता की खेती करने वाले किसान अपनी फसल को बरसाती नमी के चलते पनपने वाले तना गलन रोग की रोक. थाम के लिए पानी की निकासी का ध्यान रखें। बीमारी फैलने पर तीन ग्राम कार्बन्डाजिम एवं केप्टान में से किसी एक दवा को प्रति लीटर पानी की दर से घोलकर छिड़काव करें। पौधों में कंपोस्ट खाद के साथ मिलाकर मिनरल मिक्चर एवं उन्य जरूरी उर्वरकों का प्रयोग करें।

टमाटर के कार्य : किसी भी फसल से अच्छे पैसे चाहिए तो इस बात का ध्यान रखें कि फसल तैयार होते समय विवाहकृशा. दियों के साहलग आदि हों तो फसल की अच्छी कीमत मिल जाएगी। यानी बाजार को टारगेट करके फसल लगाएं ताकि मंदी का समाना न करना पड़े। अक्टूबर में टमाटर की नर्सरी डालें। इसे नवंबर में रोप दें।

जनवरी में यह धीमी गति से विकसित होकर फरवरी तक फल देने लायक हो जाएगी। इसके साथ पौध रोपने के बाद बेबीकार्न जैसी किसी फसल को दूरी पर सहफसली फसल के रूप में लगा सकते हैं।

सब्जी वाली फसलों में सामयिक कार्य

1.प्याज:

कई इलाकों में प्याज को मुख्य फसल के रूप में लगाते हैं। इसकी नर्सरी डालने का काम सतत रूप से चल रहा है। नर्स. री सदैव बैड यानी क्यारी से थोडा ऊंचे स्थान पर डालनी चाहिए। यदि स्थान नहो तो बगल से मिट्टी उठाकर बैड बना लेना चाहिए। नर्सदी 15 अक्टूबर से मध्य नवंबर तक डाली जा सकती है। इसकी अनेक उन्नत किस्में सरकारी संस्थानों ने व प्राईवेट कंपनियों ने विकसित की हैं। अच्छा हो कि निकट के प्याज की खेती करने वाले किसानों से बात करके ही नए किसान किस्म का इलाकाई आधार पर चयन करें। किस्मों में पूसा रेड, व्हाइट, रत्नाकर, माधवी आदि में से किसी एक का चयन करें।

2.लहसुन की खेती में कार्य:

लहसुन को लगाने के लिए अक्टूबर माह में उपयुक्त तापमान होता है। इसकी मोटी व स्वस्थ कलियों को अलग कर लेना चाहिए व इन्हें उचित दूरी पर रोप दें। खेत में उर्वरक प्रबंधन का ध्यान रखें। खाद, पानी एवं रोग नियंत्रण के लिए विशेषज्ञों से सलाह लेकर उपचार करें।

3.पत्ता एवं फूल गोभी:

पत्ता एवं फूलगोभी की अनेक किस्में आ चुकी हैं। यानी इन्हें साल भर किसी भी समय उगाया व बेचा जा सकता है। उचित किस्म का चयन करें। अगेती किस्में लगाने से देखभाल ज्यादा करनी होती है लेकिन कीमत भी अच्छी मिलती है। रापी जा चुकी पौध में कीटनाशक एवं फफूंदनाशक दवाओं का समय समय पर जरूरत के अनुरूप छिडकाव करते रहें। मांग के अनुरूप 10 से 15 दिन के अंतराल पर सिंचाई करते रहें।

4.पत्ते वाली सब्जियां:

आगामी सीजन में पत्ते वाली सब्जियों की मांग खूब रहती है। इसके लिए बाथुआ, पालक, मेथी, धनियां आदि खूब लगाया जाता है। यह सभी एक माह बाद काटने के लिए तैयार हो जाती है। इसकी अच्छी किस्में लगाएं व उचित देखभाल करें। अगेती फसल आने से मुनाफा भी ठीक ठाक होगा।

5.कंद वाली मूली गाजर:

मूली की कई किस्में बाजार में हैं। इन्हें लगाकर अगेती किस्मों से अच्छा पैसा प्राप्त कर सकते हैं। कई दफा अगेती मूली थोक मंडी में भी 30 से 35 रुपए किलोग्राम तक बिक जाती है। जापानी वहाइट, पूसा केशर, देशी व इंगलिश कैरेट की कई किस्में अक्टूबर माह में लगाई जा सकती हैं। सब्जी वाली फसलों में कंपोस्ट खाद अवश्य डालें अन्यथा इनकी गुणवत्ता व उत्पादन अच्छा नहीं रहता।

चारे वाली बरसीम व सुपर नेपियर: अक्टूबर माह के अंत में बरसीम लगा सकते हैं। इसके अलावा सुपर नेपियर आदि की कटिंग को भी इस माह में लगाया जा सकता है। इससे अच्छा जमाव होता है। चारे वाली जई को भी इस समय लगा सकते हैं। बहु कटान वाली जई पशुओं के लिए उन्नत चारे के रूप में जानी जाती है।

जबकि बड़े किसान भाई इसके दानों को मशीनों की सहायता से निकालते हैं। पेड़ो की भूसी पशु चारे के रूप में काम आती है। इसलिये किसान भाई इसका भी बहुत ध्यान रखते हैं।

किसानों को मिलता है कितना लाभ

ईसबगोल की औसतन पैदावार 10 से 12 क्विंटल प्रति हेक्टेयर के आसपास पाई जाती है। इसके दानों से मिलने वाली भूसी की मात्रा 25 प्रतिशत के आसपास होती है। इस तरह से औसतन ढाई से तीन क्विंटल प्रति हेक्टेयर भूसी तैयार होती है। इसका बाजार में 11 से 15 हजार रुपये क्विंटल के आसपास रहता है। इस तरह से किसान भाइयों को प्रति हेक्टेयर 3 से 4 लाख रुपये तक की कमाई हो जाती है। यह फसल कुल 110 से 120 दिन में तैयार होती है। इस तरह से किसान भाइयों को मात्र चार महीने में हजारों की लागत से लाखों रुपये की कमाई हो सकती है।

कृषि पत्रकार बनें

मेरी खेती डॉट कॉम बेवासइट एवं यूटयूब चैनल के लिए आप अपने क्षेत्र के सफल किसान की कहानी या वीडिया हमें हमारी Email Id:- merikhetiindia@gmail.com पर भेज सकते हैं। हम उन्हें अन्य किसानों को प्रेरित करने के लिए अपने कार्यक्रम में शामिल करेंगे। किसान आपस में ज्ञान को बहुत तेजी से सीखते समझते हैं। आप यदि युवा हैं और खेती में कुछ करना या आगे बढ़ना चाहत हैं तो इस दिशा में विचार कर सकते हैं। हम आपके विचार को परवान चढ़ाने के लिए सदैव उत्साहित रहेंगे।

EURO 47
धाकड़ है!

ताकत, फीचर्स, किफ़ायत या दाम में

लड़ा लो किसी भी 50HP श्रेणी के अन्य ट्रैक्टर से

- यूरो 50 का दमदार इंजन
- पावरट्रैक की मानी हुई किफ़ायत

37 kW श्रेणी (50 HP श्रेणी)

चलाए आसानी से 2.13 मी (7 फीट) रोटावेटर

फुल्ली लोडेड

- इयूअल क्लच
- साइड शिफ्ट गियर
- मल्टी स्पीड व रिवर्स PTO
- 0.37 m x 0.71 m (14.9 x 28) टायर

*नियम व शर्तें लागू।